ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक
परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - १७ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र सितम्बर (प्रथम) २०१५

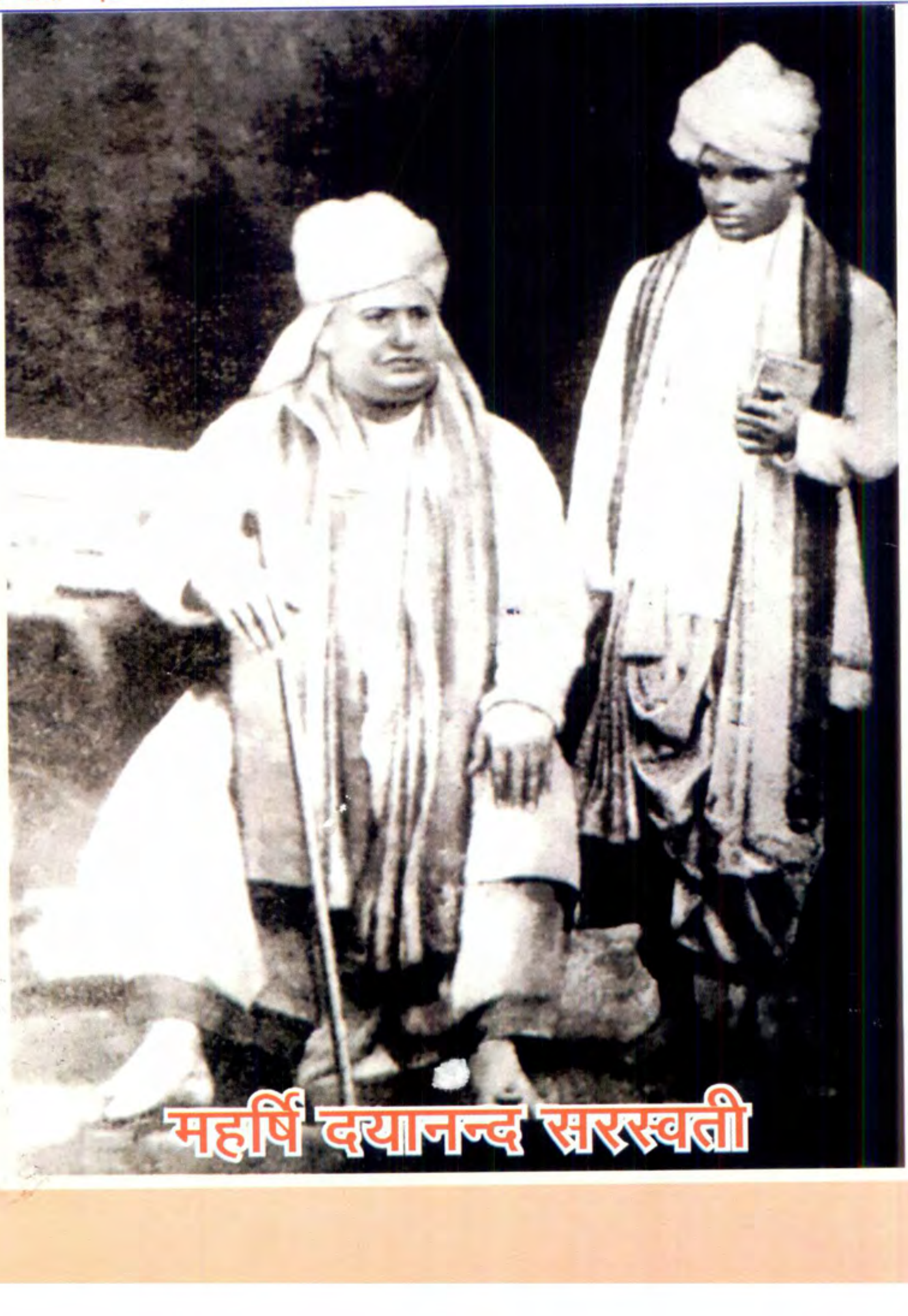

स्वतंत्रता दिवस की झलकियाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : १७
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: भाद्रपद कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

सितम्बर प्रथम २०१५

अनुक्रम

१. राधे माँ : पाखण्ड की पाखण्ड के....	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. नेपाल में परोपकारिणी सभा द्वारा....	कर्मवीर	१४
४. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		१७
५. ईश्वर: जैन एवं वैदिक दृष्टि	डॉ. वेदपाल	२०
६. पुस्तक-समीक्षा		२५
७. हमारी गुजरात यात्रा- (२)	प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु	२८
८. कैसा स्वतंत्रता दिवस?	धर्मवीर आर्य,	३३
९. जिज्ञासा समाधान-९४	आचार्य सोमदेव	३५
१०. संस्था-समाचार		३८
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-१७		४०
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

राधे माँ : पाखण्ड की पाखण्ड के विरुद्ध लड़ाई

एक बार एक चोर चोरी करता पकड़ा गया। उसे राजा के कर्मचारियों द्वारा पकड़ लिया गया, राजा ने उसे दण्ड देकर जेल में भेज दिया। चोर ने विचार किया और एक उपाय सोचा, उसने राज्य के कर्मचारी से राजा तक सन्देश भिजवाया कि वह सोने की खेती करना जानता है, यदि राजा उचित समझें तो वह खेती करके दिखा भी सकता है। राजा के मन में उत्सुकता जगी और उसने चोर द्वारा सोने की खेती देखने का निश्चय किया। चोर ने सोने के बीज मंगवाये, हल मंगवाया, एक खेत तैयार किया गया, राजा राज्य के अधिकारी और नागरिक बड़ी संख्या में खेती देखने के लिये एकत्रित हो गये। चोर किसान के रूप में हल पकड़कर एक हाथ में सोने के बीज लेकर खड़ा हो गया और चिन्ता की मुद्रा बनाते हुए राजा से बोला- राजन मेरे सामने एक समस्या है, यदि आप इसमें मेरी सहायता करें तो यह सोने की खेती सफल हो सकती है। राजा ने कहा- बताओ, क्या समस्या है? चोर ने हाथ जोड़कर राजा से कहा- सोने की खेती तभी सफल हो सकती है, जब कोई पवित्र व्यक्ति के द्वारा सोने के बीज खेत में बोये जावें। मैं तो चोरी करने के कारण अपराधी और पाप का भागी बन गया हूँ, अत: आपके नगर में ऐसे व्यक्ति बहुत होंगे, जिन्होंने कभी चोरी न की हो, आप ऐसे व्यक्ति को बुलवा लें और उससे ये सोने के बीज खेत में बुवा दें। राजा ने घोषणा कर दी- नगर का कोई व्यक्ति आ जाये, जिसने जीवन में कभी चोरी न की हो, उसके द्वारा ये बीज बोये जायेंगे। सब ही एक-दूसरे की ओर देखने लगे, सबको अपने द्वारा की गई चोरी याद आने लगी। नगरवासियों में से जब कोई नहीं निकला तो चोर ने राजा से निवेदन किया- आपके कर्मचारियों में तो ऐसे लोग बहुत होंगे जिन्होंने चोरी नहीं की। राजा ने राज्य के कर्मचारियों को आदेश दिया- जिसने चोरी न की हो, वह आगे आये और बीज बोये। कोई आगे नहीं आया, तब चोर ने कहा- महाराज फिर आप ही अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो पवित्र हैं, जिन्होंने कभी चोरी नहीं की, आप स्वयं ही यह सोने के बीज खेत में बोने का काम करें। राजा सोच में पड़ गया और अपने पिछले जीवन पर विचार किया तो उसे स्मरण आया बचपन में माँ से छिपा कर लड्डू खाये थे, इस प्रकार राजा ने भी अपने जीवन में चोरी की, तब चोर ने कहा- महाराज! जब आपके राज्य में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं, जिसने चोरी नहीं की? फिर मुझ ही को दण्डित क्यों कर रहे हैं? यही स्थिति राधे माँ की है। राधे माँ तो पाखण्ड कर ही रही है परन्तु इस पाखण्ड का विरोध करने वाले स्वयं सारे ही पाखण्डी हैं। यथार्थ तो यह है कि कोई पाखण्ड का विरोध नहीं करना चाहता। जो व्यक्ति दूसरे के पाखण्ड से पीड़ित है, वह पहले व्यक्ति के पाखण्ड का विरोधी है। ऐसी स्थिति में कोई जीते और कोई हारे, पाखण्ड ही जीतता है और पाखण्ड ही हारता है। भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई सत्य, अहिंसा के प्रेमी थे, उनसे एक व्यक्ति ने एक प्रश्न किया- आप कहते हैं सच-झूठ की लड़ाई में सदा सत्य की विजय होती है परन्तु हमारे अनुभव में यह आता है, प्राय: सत्य और असत्य की लड़ाई में असत्य का पक्ष विजयी होता है। तब मोरार जी भाई ने कहा- यह सत्य नहीं है, विजय तो सदा सत्य की ही होती है। तब मोरार जी भाई ने उस व्यक्ति से पूछा- क्या सत्य की बात करने वाला थोड़ा भी असत्य की सहायता नहीं लेता, तब उस व्यक्ति ने कहा- क्या हुआ कहीं थोड़ी भूल हो गई हो। तब मोरार जी देसाई ने उस व्यक्ति से कहा- भाई! तब यह लड़ाई छोटे झूठ और बड़े झूठ की है, इस परिस्थिति में बड़े झूठ का जीतना निश्चित है। आज राधे माँ पर आरोप है- हत्या, दहेज प्रताड़ना, अश्लील आचरण, आर्थिक शोषण आदि सभी तथाकथित धार्मिक लोग यही करते हैं। उन्हें ऐसा करने के लिए धर्म और धार्मिक स्थानों की आड़ सबसे सरल उपाय है। ईसाई, मुसलमान, हिन्दू जितने भी धार्मिक संगठन है, ये सब धर्म का केवल अपने को बचाने के लिये आश्रय लेते हैं, धार्मिक होने में किसी की आस्था नहीं है परन्तु धार्मिक दीखने का प्रयत्न सभी करते हैं, इस व्यवस्था के लिये लोग धर्म को दोषी मानते हैं। उनके विचार से धर्म की आड़ न हो तो इन अपराधों से बचा जा सकता है। जो लोग आज ऐसा कहते हैं, जब पाखण्ड करने वाले लोगों की संख्या बड़ी हो जाती है, तब उनको आस्था की बात कह कर बचाने का प्रयास किया जाता है। आज धर्म के नाम पर हजारों सन्त, महन्त, महात्मा, गुरु, महाराज, भगवान, देवी बने घूम रहे हैं परन्तु उनका विरोध करने पर लोग, इसे धर्म का अनादर समझने लगते हैं, धार्मिक विद्वेष की संज्ञा देते हैं। इन धार्मिक सम्प्रदायों से सरकार भयभीत होती है। चुनाव जीतने में पार्टियाँ उनसे हाथ जोड़कर विजयी बनाने का आशीर्वाद माँगती हैं।

आसाराम जैसे लोग अपने भक्तों व पैसों के बल पर लम्बी लड़ाई धर्म के नाम पर ही लड़ते हैं। डेरा सच्चा सौदा जैसे मठों की ताकत सरकार को डराती है। सन्त रामपाल दास जैसे लोग कानून के शिकञ्जे में कभी-कभी ही फंसते हैं। इस सब के होने पर भी यह प्रक्रिया कभी रुकती नहीं, क्यों? संसार में समाज के सभी लोग कम अधिक पाखण्ड, अधार्मिक, अनैतिक होने पर भी ऐसे लोग धर्म बुरा है तो उसे छोड़ क्यों नहीं देते। इसके विपरीत वे अधर्म पाखण्ड को बुरा मानने वाले लोग धर्म को अपना क्यों नहीं लेते। दोहरा जीवन हमारी विवशता क्यों बन गया है। सामान्य रूप में धर्म के नाम पर अधर्म पाखण्ड होते देखकर मन में यह बात आना स्वाभाविक है, ऐसे धर्म नैतिकता, सच्चाई जैसी बातों का क्या लाभ है। पचास वर्ष पहले तक साम्यवादी लोग एक बात बहुत बार दोहराते थे, धर्म अफीम है, इसको व्यक्ति को अपने जीवन से निकाल देना चाहिए। समाज में धर्म का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। साम्यवादी देशों ने धार्मिक बातों, क्रियाकलापों को प्रतिबन्धित कर दिया था। उनका मानना था धर्म शोषण का आधार है, जो वस्तु शोषण का कारण हो उसे समाप्त कर देना चाहिए। उन्होंने ऐसा किया भी परन्तु वे धर्म को समाप्त तो नहीं कर सके। क्योंकि शोषण का आधार वही वस्तु बन सकती है जो उसके लिये आवश्यक है। किसी मनुष्य या प्राणी को जिस वस्तु की आवश्यकता नहीं वह वस्तु उससे छीनकर, या न देकर उसे कोई भी विवश नहीं कर सकता। भोजन, वस्त्र, औषध, आवास, धन मनुष्य की आवश्यकता है, इनका प्रलोभन देकर या इन्हें छीन कर उस व्यक्ति को विवश किया जा सकता है, उसे आधीन बनाया जा सकता है। इसी प्रकार यदि धर्म से किसी का शोषण हो रहा है तो यह भी स्वीकार करना होगा कि धर्म मनुष्य जीवन के लिये आवश्यक है। एक सामान्य मनुष्य की समस्या यह है कि यदि धर्म नैतिकता, ईमानदारी, निष्ठा की बात न करे तो उसे कोई सुनना नहीं चाहता। व्यवहार में बेइमानी, अधर्म, अनैतिकता न करे तो जीवन में संकट आने लगता है। इस ऊहापोह में उसका पूरा जीवन निकल जाता है, परन्तु वह किसी निर्णय तक नहीं पहुँच पाता। दोनों सत्य उसके सम्मुख हैं, वह दोनों से अपने को पृथक् नहीं कर सकता। इसका उत्तर है परन्तु उस उत्तर तक पहुँचने से पहले ही समाप्त हो जाता है। संसार धर्म-अधर्म, अच्छे-बुरे, पाप-पुण्य, सत्य-असत्य इसका मिश्रण है। ये दोनों शब्द सापेक्ष है, यदि धर्म नहीं तो अधर्म क्या और अधर्म की सत्ता न हो तो धर्म क्या? झूठ न हो तो सच किसे कहा जाय और सच न हो झूठ का अर्थ क्या? संसार में दोनों बातें थीं, हैं और सदा ही रहेगी। ऋषि दयानन्द लिखते हैं धर्म-अधर्म का सर्वथा अभाव कभी नहीं होता। इनकी वृद्धि और ह्रास होता रहता है। धर्म की मात्रा बढ़ने से समाज में सुख बढ़ता है। अधर्म की वृद्धि से समाज में दुःख की मात्रा बढ़ती है। सामान्य जन के लिए यह समझना कठिन है कि अधर्म से, अनैतिकता से, पाखण्ड से असत्य से दुःख बढ़ता है। इसके विपरीत समाज में तो हर व्यक्ति अनुभव करता है अधर्म, पाखण्ड, झूठ से मनुष्य सम्पन्न, सुखी, सम्मानित हो रहा है, धार्मिक व्यक्ति दुःखी, पीड़ित, शोषित किया जा रहा है। यह कथन इस कारण सत्य नहीं है, यदि ये बात सच होती तो हर बेइमान आदमी सुखी और सन्तुष्ट होता। इतना ही नहीं वह समाज में सबके द्वारा सम्मानित भी किया जाता परन्तु ऐसा नहीं है। संसार के नियम, विधान अधर्म, अन्याय, पाखण्ड, झूठ को समाप्त करने के लिये बने हैं। किसी को भी सत्य बोलने के लिये दण्डित नहीं किया जाता, कोई व्यक्ति सत्य बोलता है, यह कहकर जेल में नहीं डाला जाता। सच्चे व्यक्ति को झूठे आरोपों में फंसाकर दण्डित किया जाता है या जेल भेजा जाता है। समाज में धर्म व सत्य का ही सम्मान किया जाता है। व्यक्तिगत स्तर पर भी हम देखें तो पाते हैं कि हमें कोई झूठा, बेईमान, पाखण्डी कहे, यह किसी को भी स्वीकार नहीं होगा। यदि झूठ बोलना लाभदायक है तो झूठा कहलाना हानि कारक कैसे हो सकता है। कोई व्यक्ति दुराचरण में लिप्त पाया जाता है परन्तु उसे कोई दुराचारी कहे, यह उसे सह्य नहीं हो सकता। ये दोनों परस्पर विरोधी बातें प्रत्येक मनुष्य के भीतर ही हैं। इन्हीं से प्रेरित होकर वह कभी अधर्म की ओर प्रेरित होता है और कभी धर्म की ओर। एक ही व्यक्ति ऐसा व्यवहार क्यों करता है, इसको समझना बहुत कठिन नहीं है। इसका उत्तर इस बात से मिल जाता है, आप किस कार्य को कर के क्या प्राप्त करते हैं। अधर्म, असत्य, पाखण्ड, झूठ से हम क्या प्राप्त करना चाहते हैं। पहली वस्तु है, इन कार्यों को करके मनुष्य धन सम्पन्नता वैभव पाने की इच्छा रखता है, ऐसा करके वह सांसारिक वस्तुओं को पा जाता है। इस परिणाम के बाद उसे इसी मार्ग पर चलते हुए सन्तुष्ट रहना चाहिए, परन्तु इन सब बातों के साथ-साथ सच्चाई, ईमानदारी, धार्मिकता को अपने पास देखना चाहता है। इसका इतना ही अभिप्राय है मनुष्य अधार्मिक या अनैतिक होकर सन्तुष्ट नहीं हो सकता। दूसरा पक्ष है धार्मिकता से क्या मिलता है, इससे सन्तुष्टि, शान्ति, सुख का अनुभव मिलता है। मनुष्य की समस्या है शान्ति-

सन्तुष्टि से भोजन, वस्त्र, आवास, औषधी, शिक्षा और दुनिया का जीवन उपयोगी सामान नहीं मिलता। भले ही संसार के अधिकांश लोगों का विचार ऐसा ही हो परन्तु यह विचार सत्य नहीं है। यह बात समझना भी कठिन नहीं है, मनुष्य झूठ बोलकर पाखण्ड करके जो पाता है, वह जीवन के लिये आवश्यक है। संसार में आवश्यकता का आधार शरीर है। संसार की सारी आवश्यकतायें शरीर से जुड़ी है। ईश्वर ने संसार में इतने पर्याप्त साधन साधन दिये हैं कि प्रत्येक मनुष्य नहीं प्रत्येक प्राणी की आवश्यकता पूर्ण हो सकती है। मनुष्य तीन स्तरों पर जीता है- **प्रथम** शरीर के स्तर पर, **दूसरा** मन के स्तर पर, **तीसरा** आत्मा के स्तर पर। आवश्यकता शरीर की होती है, इच्छा मन की होती है, तीसरा स्तर आत्मा है, जहाँ सुख, शान्ति, सन्तुष्टि का स्थान है। अब हम जो कर रहे हैं वह हम किसके लिये कर रहे हैं। शरीर की आवश्यकतायें बहुत सीमित है, इसके लिये हम जीवन भर का गणित करके भोजन, वस्त्र, आवास का संग्रह करें तो जो आज हमारे पास है, उससे भी कम की आवश्यकता है। दूसरा हमारा साधन है मन वह हमारा है, हमें उसकी भी चिन्ता करनी चाहिए, उसकी आवश्यकता को हम इच्छा कहते हैं। वैसे भगवान ने मन को ऐसा बनाया है कि शरीर की भांति इसे भोजन, पानी, वस्त्र, आवास की आवश्यकता नहीं होती। शरीर के साधनों से उसका पोषण हो जाता है परन्तु उसकी इच्छा की पूर्ति के लिये शरीर को दण्ड भोगना पड़ता है। आपका पेट तो दो रसगुल्ले से भर जाता है परन्तु मन आपको छह खिला देता है, इसका दण्ड शरीर को भोगना पड़ता है। शरीर की आवश्यकतायें तो बहुत थोड़े साधनों से पूर्ण की जा सकती है परन्तु संसार के सारे साधन भी एक मन की इच्छा को पूरा नहीं कर पाते। थोड़ी सी ईमानदारी आत्मा को बहुत सारा सुख दे जाती है परन्तु जीवन भर की बेईमानी मनुष्य को कभी तृप्ति देने में समर्थ नहीं होती। संसार में मनुष्य अधर्म करने से तभी रुक सकता है या तो संसार की सारी सम्पत्ति उसे मिल जाय या मन तृप्त हो जाये, ये दोनों बातें अधर्म से सम्भव नहीं है, इसलिए मनुष्य कभी अधर्म करने से रुक नहीं पाता। विचारशील व्यक्ति के मन में यहाँ एक प्रश्न उठ सकता है, शरीर की आवश्यकता थोड़ी क्यों मन की इच्छा अधिक क्यों। इसका उत्तर है, दोनों मनुष्य की आत्मा के साधन है। शरीर से इस जीवन की यात्रा होती है, मन से ससांर से मुक्ति की यात्रा करनी है। जैसे एक तोप गाड़ी में गाड़ी की आवश्यकता कम है तोप की अधिक किन्तु तोप का मुख अपनी सेना पर तो नहीं किया जा सकता है। हमने यही कर रखा, अपने मन को मुक्ति की ओर न करके संसार की ओर कर लिया है। तोप चलेगी तो गड्ढा होगा, फसेंगे हम ही, वही तो हो रहा है। मन आत्मा के साथ न होकर शरीर के साथ होता है, दुर्बल होता है, आत्मा के साथ होता है तो बलवान होता है। इस दुर्बलता में यह सदा भय और लोभ से ग्रस्त रहता है, परिणामस्वरूप अधर्म, अन्याय, अत्याचार, पाप में लिप्त रहता है। धर्म, न्याय, सत्य, आत्मा की आवश्यकता है, शरीर के कारण अधर्म को नहीं छोड़ पाता, आत्मा के कारण सत्य से भाग नहीं सकता। सारभूत बात तो इतनी है स्वामी तो आत्मा है। आत्मा का आदेश तो अन्तिम है। हम संसार में कितना भी झूठ क्यों न बोले कहना पड़ेगा कि यह सत्य है। न्यायालय में व्यक्ति साक्षी देता है, कितनी भी झूठी साक्षी दे परन्तु शपथ तो सत्य बोलने की ही खानी पड़ेगी। कोई कितना भी पाखण्ड, अधर्म, अन्याय, अत्याचार क्यों न करे, उसे न्याय और धर्म का ही नाम देना होगा। मनुष्य को विचार करने की बात पाखण्ड, झूठ, अधर्म, सब कुछ धर्म के नाम पर चढ़कर चल रहा है। यदि वह वास्तव में धर्म और सत्य हो तो उसमें कितना बल होगा। जब तक मनुष्य अपने मन को आत्मा से नहीं जोड़ेगा तब तक वह भय और प्रलोभन से मुक्त नहीं हो सकता। मनुष्य झूठ बोलकर पाखण्ड करके अपने को बुद्धिमान समझता है परन्तु वास्तविकता तो यह है जो जितना दुर्बल होता है, वह उतना ही अधिक झूठा और बेईमान होता है। व्यक्ति असत्य का सहारा तभी लेता है जब वह दुर्बल होता है। मनुष्य का भय सत्य से, ज्ञान से दूर होता है, ज्ञान में जितना-जितना सत्य ज्ञान आता जायेगा, मनुष्य निर्भय होता जायेगा। तभी मनुष्य पूर्ण धर्मात्मा और पाखण्ड रहित बन सकेगा। शरीर के स्तर पर जीने वाला दास होता है, मन के स्तर पर जीने वाला पाखण्डी होता है और आत्मा के स्तर पर जीने वाला धार्मिक होता है। मन के स्तर पर जीने वाले धर्म का उपयोग करते हैं परन्तु साधनों में, संसार में जीते हैं। वे धर्म-अधर्म जानते हुए भी दुर्योधन की तरह अधर्म करने के लिये विवश हैं, दुर्योधन कहता है- धर्म क्या है? जानता हूँ, करने की इच्छा नहीं होती, अधर्म को भी पहचानता हूँ, दूर होने का मन नहीं करता, वह हम सबका भी यही हाल है, हम भी कह उठते हैं-

जानामि धर्मं न च मे प्रवृतिः जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
केनापि देवेन हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

- धर्मवीर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

एक करणीय कार्यः- गुजरात यात्रा में हम लोगों ने महर्षि की गुजरात यात्रा तथा महर्षि के जीवन पर तो व्याख्यान दिये ही, इनके साथ सैद्धान्तिक व आध्यात्मिक व्याख्यान तथा प्रवचन भी देते रहे। एक नगर में महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति तथा विश्वव्यापी दिग्विजय पर बोलते हुए मैंने मत पन्थों के नये-नये ग्रन्थों के उद्धरण देकर ऋषि दयानन्द की दिग्विजय व अमिट छाप के प्रमाण दिये तो आदरणीय आचार्य नन्दकिशोर जी ने यात्रा की समाप्ति तक बार-बार यह अनुरोध किया कि अपनी इस नवीन खोज व चिन्तन पर कुछ लिख दें। अधिक नहीं तो ३६-४८ पृष्ठ की एक पुस्तक अतिशीघ्र लिखकर छपवा दें।

मैंने उनकी प्रेरणा को स्वीकार करते हुए इस करणीय कार्य को अतिशीघ्र करने को कहा। श्रीमान् आनन्द किशोर जी की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि वह दिन-रात धर्म प्रचार व साहित्य के लिये सोचते रहते हैं।

मैंने उस व्याख्यान में कहा क्या? इस पर कुछ लिखना नई पीढ़ी व पुराने आर्यों सबके लिए लाभप्रद रहेगा। उ.प्र. के गोरखपुर जनपद से भी आर्य बन्धु श्री लल्लनसिंह का एक ऐसा ही पत्र मिला है। ऋषि जी ने सृष्टि नियमों को अनादि, अटल व नित्य माना है। महर्षि ने तीन पदार्थों को अनादि व नित्य माना है। धर्म को सार्वभौमिक माना है। ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के विपरीत कुछ भी ऋषि को मान्य नहीं है। यह है ऋषि की मूलभूत विचारधारा जिसका आज संसार में डंका बज रहा है। आर्यसमाज महर्षि दर्शन की दिग्विजय के प्रचार को पूरी शक्ति से, ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पा रहा। मैंने कहा, इस्लाम का दृष्टिकोण यह रहा कि अल्लाह ने 'कुन' कहा तो सृष्टि रची गई। 'कुन' कहा किस से? श्रोता जब कोई था ही नहीं तो यह आदेश जड़ को दिया गया या चेतन को? बिना उपादान कारण के सब सृष्टि जब रची गई तो फिर अल्लाह अनादि काल से पालक, मालिक, न्यायकारी, दाता व स्रष्टा कैसे माना जा सकता है? कुरान में अल्लाह के इन नामों की व्याख्या तो कोई करके दिखावे?

आज उपादान कारण के बिन 'कुन' कहकर कोई सूई, मेज, चारपाई, चाय की प्याली तो बनाकर दिखा दे। चाँद-सूरज तो भगवान् ही बना सकता है। यह हमें मान्य है परन्तु जीव अपने वाला कोई कार्य तो करके दिखा दे।

इरान, जापान, मिश्र, पाकिस्तान व अमरीका, बंगला देश के सब वैज्ञानिक यह मानते हैं कि Matter can neither be created nor it can be destroyed. अर्थात् प्रकृति को न तो कोई उत्पन्न कर सकता है और न ही इसे नष्ट किया जा सकता है। बाइबिल व कुरान की किसी आयत से ऐसा सिद्ध नहीं हो सकता। वहाँ तो 'कुन' मिलेगा अथवा। बाइबिल की पहली आयत 'पोल' की चर्चा करती है। बाइबिल के नये संस्करणों में Void (पोल) का लोप हो जाना वैदिक धर्म की दिग्विजय माननी पड़ेगी।

"and the spirit of God was howering over the waters." अर्थात् परमात्मा का आत्मा जलों पर मंडरा रहा था। हम बाइबिल के इस कथन पर दो प्रश्न पूछने की अनुमति माँगते हैं। **सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व जल कहाँ से आ गये?** सृजन का कार्य तो अभी आरम्भ ही नहीं हुआ। जलों को किसने बना दिया? जल ईश्वर द्वारा बनाने की बाइबिल में कहीं चर्चा ही नहीं। ईश्वर के अतिरिक्त प्रकृति (जल) का होना बाइबिल की पहली आयत से ही सिद्ध हो गया। फिर यह भी मानना पड़ेगा कि बाइबिल का ईश्वर यहाँ शरीरधारी नहीं। वह निराकार है। आगे बाइबिल ३-८ में हम पढ़ते हैं "Then the man and his wife heard the sound of the Lord God as he was walking in the garden in the cool of the day." अर्थात् तब आदम व उसकी पत्नी ने परमात्मा की आवाज सुनी। वह (परमात्मा) दिन की ठण्डी में वाटिका में सैर कर रहा था।

यहाँ परमात्मा देहधारी के रूप में उद्यान में विचरण करते हुए उन दोनों की खोज करता है। आवाजें लगाता है कि तुम कहाँ हो? परमात्मा का शरीर कब बना? किस ने बनाया? किससे बनाया? मनुष्य तो भक्ति भाव से मक्का, मदीना, काशी व यरुशलम में ईश्वर को खोजते फिरते हैं।

यहाँ ईश्वर अपनी बनाई जोड़ी को खोजने निकला है। उसकी सर्वज्ञता पर ही पानी फेर दिया गया है। ऐसे-ऐसे कई प्रश्न श्री हरिकिशन जी की पूना से छपी पुस्तक 'बाइबिल-ईश्वरीय सन्देश।' में पाठक पढ़ें तो। हमने भी इसके प्राक्कथन में एक प्रश्न उठाया है। अब बाइबिल में 'उत्पत्ति' पुस्तक में दो बार 'Human Beings' शब्दों का प्रयोग किया गया है अर्थात् एक जोड़ा नहीं कई जोड़े सृष्टि के आदि में बिना माता-पिता के (अमैथुनी) उत्पन्न किये गये।

क्या यह सब कुछ महर्षि दयानन्द जी की दिग्विजय नहीं है? गत ५०-६० वर्षों में आर्य लेखकों की पुस्तकों की सूचियाँ बनाकर प्रचारित करने को ही शोध समझ लिया गया। पं. लेखराम जी से लेकर उपाध्याय जी पर्यन्त सैद्धान्तिक दृष्टि से बाइबिल कुरान आदि पर समीक्षा व शोध करना छूट गया। फिर भी आप इसे पं. लेखराम जी, पं. चमूपति जी की परम्परा के विद्वानों की तपस्या का चमत्कार मानेंगे कि बाइबिल के भाव तो बदले सो बदले, पाठ के पाठ बदल दिये गये हैं। ऋषि की इस दिग्विजय पर श्री नन्दकिशोर जी 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' जैसा एक ग्रन्थ मुझसे चाहते हैं। बड़ा ग्रन्थ न सही ४८ पृष्ठ का ही हो जाये। उनका यह अनुरोध मुझे मान्य है।

परमात्मा का शरीर कब बना? किससे बना?:- बाइबिल के प्रथम वाक्य आकाश (Heaven) को ईश्वर द्वारा बनाया गया, लिखा है और फिर आठवें वाक्य में दोबारा Heaven (आकाश) का सृजन हुआ। आकाश दो बार क्यों रचना पड़ा? पहले जो आकाश बनाया गया था, उसमें क्या दोष था? आश्चर्य है कि बहुत पठित लोग भी इस भूल-भुलैयाँ को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं।

यही नहीं बाइबिल की २६वीं आयत में आता है, 'Let us make man in our own image.' अर्थात् परमात्मा ने अपनी आकृति पर मनुष्य को बनाने का मन बनाया। परन्तु अपने देह को कब और कैसे बनाया- यह बाइबिल में इस से पहले कहीं बताया ही नहीं गया।

उत्पत्ति २-७ में पुन: God formed man of the dust of the ground. लिखा मिलता है अर्थात् धरती की धूलि मट्टी से मनुष्य को बनाया गया। प्रश्न उठता है कि जब ईश्वर के सदृश ही मनुष्य को बनाया तो क्या फिर परमात्मा की देह भी धूलि मट्टी से निर्मित होगी। इस शंका का समाधान कैसे हो?

प्रत्येक आर्य को श्री हरिकृष्ण जी की पूना से प्रकाशित पुस्तक पढ़नी व पढ़ानी चाहिये।

श्री विशाल का प्रश्न:- दिल्ली के श्री विशाल धर्मनिष्ठ व लगनशील युवक हैं। अभी अनुभवहीन हैं। उन्हें निरन्तर स्वाध्याय करके अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिये। आप विधर्मियों को बहुत सुनते व पढ़ते हैं। उनके प्रत्येक आक्षेप का उत्तर देने की योग्यता तो समय पाकर ही आयेगी। आपने एक मुसलमान का यह आक्षेप सुनकर उसका उत्तर माँगा है कि अथर्ववेद के एक मन्त्र में, "हमारे शत्रुओं को मारने की प्रार्थना है।" मैं समझ गया कि किसी मियाँ ने जेहाद की वकालत में उसकी पुष्टि में वेद के मन्त्र का प्रमाण दे दिया। इससे इतना तो पता चल गया कि जेहाद को कुरान से तो न्याय संगत सिद्ध नहीं किया जा सका। जेहाद की पुष्टि में मियाँ लोग वेद को घसीट लाते हैं। कुरान का जेहाद विशुद्ध मजहबी लड़ाई व रक्तपात है। वेद में किसी भी मजहब की चर्चा नहीं, अत: वेद में मजहबी लड़ाई (Crusade) की गंध तक नहीं। तब मत पंथ थे ही नहीं। वेद में भले व बुरे, सज्जन व दुर्जन का तो भेद है। अन्यायी दुर्जन से लड़ाई में विजय की प्रार्थनायें हैं।

कुरान व बाइबिल दोनों हमारी इस मान्यता की पुष्टि करते हैं। कुरान की सूरते बकर की आयत संख्या २१३ का प्रामाणिक अनुवाद है "Mankind was [of] one religion [before their deviation], then Allah sent the prophetes as........." अर्थात् धरती के वासियों की एक ही भाषा और एक ही वाणी थी। वह वाणी कौनसी थी? वेदवाणी ही सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य धर्म था। इसी को शब्द प्रमाण माना जाता था। बाइबिल का घोष विश्व को सुनाना समझाना होगा, In the beginning was the **Word**, and the **Word** was with God, and the **Word** was God. कितने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की गई है कि आदि में शब्द (शब्द प्रमाण-वेद) था, शब्द ईश्वर के पास था और शब्द (ज्ञान) परमात्मा था। मित्रो! मत भूलिये बाइबिल में तीन बार आने वाले इस शब्द **Word** का **W** अक्षर **Capital** बड़ा है। व्यक्तिवाचक जातिवाचक संज्ञाओं में धर्म

ग्रन्थों का पहला अक्षर सदैव कैपिटल ही होता है। यहाँ **Word** संज्ञा होने से **W** कैपिटल है। निर्विवाद रूप से यहाँ शब्द **Word** वेद के लिये प्रयुक्त हुआ है। आयत का सीधा सा भाव सृष्टि के आदि में अनादि वेद का आविर्भाव हुआ। गुण-गुणी के साथ ही रहता है, सो ईश्वर का वेद ज्ञान ईश्वर के साथ था। ईश्वर ज्ञान स्वरूप माना जाता है, सो शब्द ज्ञान वेद का परमात्मा ब्रह्म कहा जाता है। हिन्दू समाज घर-घर में बाइबिल के इस घोष को गुञ्जा कर मार्गभ्रष्ट जाति बन्धुओं का उद्धार करे।

मैंने विशाल से कहा, अरे भाई विधर्मी से वार्ता करते हुए सदा अपना पक्ष वैज्ञानिक ढंग से रखो। प्रभु निर्मित किसी वस्तु व नियम में कुछ भी दोष आज तक नहीं पाया गया। सूर्य चाँद नये नहीं बने। मनुष्य, पशु-पक्षियों की निर्माण विधि **(Design)** विधि पुराना है। अग्नि, जल, वायु और सृष्टि के सब वैज्ञानिक नियम **.(Laws)** न घटे, न घिसे और न बढ़े, फिर ईश्वरीय ज्ञान, मानव धर्म नया (इलहाम) कैसे आ गया। यह मान्यता हठ, दुराग्रह व अन्धविश्वास है।

नन्दकिशोर जी के अनुरोध को शिरोधार्य करके मैं नये सिरे से एक ऐसी पुस्तक अवश्य लिखूँगा। मुसलमानों व ईसाइयों के साहित्य में जो वेदानुकूल नई-नई शिक्षायें व मान्यतायें मिलती है, सूझबूझ से आर्य युवकों को उनको संग्रहीत करके प्रचारित करना चाहिये।

विधर्मियों का नया साहित्य देखिये:- हम देखते हैं कि आर्यसमाज में आज भी आर्यसमाज के बहुत से नये पुराने वक्ता लेखक रोमाँ रौलाँ, मैक्समूलर, सर सैयद अहमद खाँ आदि की तोता रटन को बहुत बड़ा शोध मानते हैं। दिल्ली में एक बार एक युवक लैपटॉप पर कुछ करने लगा हुआ था। कहते हैं कि पास बैठे दूसरे ने पूछ लिया- तू क्या कर रहा है? उसका उत्तर था- मैक्समूलर बाल्यकाल में कैसा था, जवानी में कैसा दीखता था...... यह बना रहा हूँ। ऐसे लोगों ने कभी अमेरिका से प्रकाशित **Hymens from The Rigveda** को देखा नहीं। बाइबिल के नये-नये अनुवाद व संस्करण देखे, पढ़े नहीं।

श्री राजवीर जी, धर्मेन्द्र जी गम्भीर अध्ययन करते हैं। समय पाकर वे दोनों कुछ अवश्य देंगे। हमें उनसे बहुत आशायें हैं।

हमारी भारी भूल:- मेरा ध्यान महाराष्ट्र के एक आर्य सामाजिक पत्र में छपे आर्यसमाज व स्वतन्त्रता संग्राम पर छपे एक लेख की ओर दिलाया गया है। आश्चर्य व दुःख का विषय है कि लेखक ने दो तीन मोटी-मोटी बातें सुनकर एक लेख उगल दिया है। लातूर क्षेत्र में हमारे शेषराव जी, हरिपन्त गुरु जी, श्याम भाई, रत्नलाल आदि वीरों की उपेक्षा करना, वीर वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश, शिवचन्द्र, भीमराव पटेल, गणपत राव कथले जी, कृष्णराव माता गोदावरी और काशीनाथ के बलिदान तथा पं. नरेन्द्र जी की सतत साधना को भूल जाना कृतघ्नता नहीं तो क्या है। मित्रो! हरिश्चन्द्र गुरु जी गोलियों की वर्षा को चीर कर गोवा के मुक्ति संग्राम में आग में कूद पड़े। क्या आप यह नहीं जानते। स्वामी श्रद्धानन्द जी के मरने पर ही यह इतिहास सुनाओगे। क्या इन प्राणवीरों का गुण कीर्तन करना जिज्ञासु का ही काम है?

सतत साधना पर प्रतिक्रियायें:- आर्यसमाज के तपोधन महान् दार्शनिक आचार्य उदयवीर जी पर मेरे ग्रन्थ सतत साधना पर सब ओर से बहुत उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियायें आ रही हैं। एक प्रतिक्रिया विपरीत भी मिली थी। मैंने उसका भी खुले हृदय से स्वागत किया था। साहित्य पिता पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की यही सीख है कि पाठक के असहमति के अधिकार का सदा सम्मान करना। केरल, गुजरात, महाराष्ट्र, उ.प्र., राजस्थान जहाँ कहीं पुस्तक पहुँची इसे पढ़कर प्रबुद्ध पाठक इसे पढ़कर गद्‌गद हो गये हैं।

१. आचार्य जी इतने क्रान्तिकारियों के गुरु व सहयोगी रहे।

२. आचार्य जी ने जान जोखिम में डालकर वीर भगतसिंह, दुर्गादेवी बोहरा को लुकाया छिपाया।

३. भगतसिंह गौरव से अपने आपको आचार्य जी का आज्ञाकारी शिष्य लिखता है। इतिहास के हस्ताक्षर आपने कहाँ से ले लिये?

४. चौधरी वेदव्रत सरीखा अड़ियल स्वाधीनता सेनानी आर्य पुरुष आचार्य जी का शिष्य था।

५. ७-८ वर्ष का शची सबसे छोटी आयु का क्रान्तिकारी अभियुक्त था। सप्रमाण यह जानकारी पाकर पाठकों को गर्व हुआ।

६. आचार्य जी कुर्सी पर विराजमान हैं और वीर भगतसिंह पीछे खड़ा है। यह ग्रुप फोटा कैसे हाथ लगा।

७. पं. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी ने आचार्य जी को हिन्दू जाति का कलङ्क मिटाने वाला माना। यह जानकर पाठक गर्वित हुए हैं। मेरा श्रम सफल हो गया। जन्म जीवन सार्थक हो गया।

भगतसिंह जी की हस्ताक्षरयुक्त पुस्तक श्री धर्मवीर जी के पास सुरक्षित है।

दिल्ली के दो प्राणवीर:- 'तड़प-झड़प' के प्रेमी पाठक प्रत्येक मणि में स्वर्णिम इतिहास के कुछ प्रेरक प्रसंग देने की माँग करते हैं। आज इस मणि में दिल्ली के दो प्राणवीरों की एक-एक घटना दी जाती है। दिल्ली के वर्तमान आर्यसमाज अब भूल गये कि यहाँ कभी महाशय मूलशंकर नाम के एक कर्मठ धर्मात्मा मिशनरी थे। मैंने भी उनको निकट से देखा। वह बहुत अच्छे तबला वादक और आदर्श आर्य पुरुष थे। उनके ग्राम कोटछुट्टा (पं. शान्तिप्रकाश जी का जन्म स्थान) में पौराणिक कथावाचक कृष्ण शास्त्री प्रचारार्थ पहुँचा। उसकी कथा में सनातनियों की विनती मानकर कट्टर आर्य मूलशंकर ने तबला बजाना मान लिया। कृष्ण शास्त्री को ऋषि को गाली देने का दौरा पड़ गया।

भरी सभा में मूलशंकर जी ने तबला उठाकर कृष्ण शास्त्री के सिर पर दे मारा और सभा से निकल आये। ''मेरे होते महर्षि दयानन्द को गाली देने की तेरी हिम्मत!'' पौराणिकों ने भी कृष्ण शास्त्री को फटकार लगाई। आर्य पुरुषो! इस घटना का मूल्याङ्कन तो करिये।

पंजाब के लेखराम नगर कादियाँ के एक आर्य नेता और अद्‌भुत गायक हमारे पूज्य लाला हरिराम जी देहल्ली रहने लग गये। कादियाँ में मिर्जाई छह मार्च के दिन पं. लेखराम जी को कोसते हुए वहाँ के हिन्दूओं विशेष रूप से आर्यों का मन आहत किया करते थे। बाजार में खड़े होकर एक बड़े मिर्जाई मौलवी ने पं. लेखराम जी के ग्रन्थ का नाम लेकर ऋषि जी के बारे में एक गन्दी बात कही। हमारे प्रेरणा स्रोत साहस के अंगारे लाला हरिराम ने भरे बाजार में स्टूल पर खड़े मियाँ की दाढ़ी कसकर पकड़कर खींचते हुए कहा, ''बता पं. लेखराम ने कहाँ यह लिखा है?'' तब कादियाँ में हिन्दू सिख मुट्ठी भर थे। मिर्जाइयों का प्रचण्ड बहुमत था। उनका उस क्षेत्र में बहुत आतंक था।

'कलम आज उनकी जय बोल।'

वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

वह बिछोना वही ओढ़ना है-
तर्ज-मनिहारी का वेष बनाया

- पं. संजीव आर्य

आओ साथी बनाएँ भगवान को।
वही दूर करेगा अज्ञान को।।
कोई उसके समान नहीं है
और उससे महान नहीं है
सुख देता वो हर इंसान को।।
वह बिछोना वही ओढ़ना है
उसका आँचल नहीं छोड़ना है
ध्यान सबका है करुणा निधान को।।
दूर मंजिल कठिन रास्ते हैं
कोई साथी हो सब चाहते हैं
चुनें उससे महाबलवान को।।
सत्य श्री से सुसज्जित करेगा
सारे जग में प्रतिष्ठित करेगा
बस करते रहें गुणगान को।।
रूप ईश्वर के हम गीत गाए
दुर्व्यसन दुःख दुर्गुण मिटाएँ
तभी पाएँगे सुख की खान को।।

- गुधनी, बदायुँ, उ.प्र.

सभा और सेनापति आदि मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम से उत्तम पदार्थों के भोजन से शरीर और आत्मा को पुष्ट और शत्रुओं की जीत कर न्याय की व्यवस्था से सब प्रजा का पालन किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३८

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : २५ अक्टूबर से ०१ नवम्बर, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

भूकम्प त्रासदी से पीड़ित नेपाल में परोपकारिणी सभा द्वारा राहत कार्य

- कर्मवीर

पिछले अंक का शेष भाग.......

२० मई को हम लोग आचार्य नन्दकिशोर जी की प्रेरणा से एक विशेष स्थान पुराना नगर साखूँ गये, जो काठमाण्डू से लगभग २० किमी. की दूरी पर था। यह एक पुराना व विशाल नगर था, तीन-तीन, चार-चार मंजिल पुरानी इमारतें यहाँ पर रही होंगी, यह नेपाल का एक पुराना व सम्पन्न बाजार रहा होगा। जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो वहाँ का दृश्य हृदय दहला देने वाला था, लगभग ९० मकान ध्वस्त थे, पूरा नगर एक मलबे के ढेर में बदल चुका था, जो कुछ भवन बचे थे- उनको भी सेना के द्वारा गिराया जा रहा था क्योंकि बड़ी-बड़ी दरारें पड़ जानें से वे बड़े भयंकर विशाल राक्षस की तरह मुहँ खोले प्रतीत होती थी, न जाने किस वक्त किसको निगल जाए। अत: भवनों को भी गिराया जा रहा था। नेपाली सेना के अतिरिक्त, रुस की सेना भी वहाँ दिखाई दी, अमेरिका का सामाजिक संगठन भी वहाँ कार्य कर रहा था, चीन इत्यादि देशों के चिकित्सक चिकित्सा कर रहे थे तो चीनी नाई पीडितों के बाल काटते भी नजर आये। एक दृश्य बडा करुणामय दिखाई देता था, उन पूर्ण रूप से ढह चुक घरों में से उनके मालिक कपड़े, टूटे-फूटे बर्तन या अन्य वस्तुएँ इकट्ठी करते दिखाई दिए। इस आशा के साथ इन वस्तुओं को निकाल रहे थे कि शायद इस संकट की घड़ी में इन वस्तुओं से ही कुछ सहायता मिल जाएगी।

पाखण्ड का रूप कितना वीभत्स एवं विकराल हो सकता है, यह जानने हेतु २१ मई को हम लोग प्रसिद्ध दक्षिण काली का मन्दिर देखने गये, जो काठमाण्डू से लगभग ३० किमी. की दूरी पर मनमोहक हरी-भरी पर्वत चोटियों के बीच स्थित था। पास ही से पर्वतों से निकल कर कल-कल करती सरिता बहती थी, यहाँ हजारों लोग प्रतिदिन आते थे, तीन-तीन रास्तों से दर्शनार्थियों की पंक्ति लगती थी परन्तु वास्तव में ये कोई उपासना स्थल नहीं था, ये तो एक प्रकार का धार्मिक बूचड़खाना था, जहाँ पर सुबह से शाम तक सैंकड़ों निरीह-निर्बल पशु-पक्षियों, बकरे-मुर्गे इत्यादि प्राणियों का संहार (हत्या) धर्म के नाम पर किया जाता है। भूकम्प के कारण सब सुनसान था। दुकानें सब बन्द थी परन्तु बंद दुकानों के भी अवलोकन से ये ज्ञात हुआ कि फूल-प्रसाद की दुकानें बाद में थी सबसे पहले रास्ते के दोनों ओर की दुकानों पर बड़े-बड़े पिजरे रखे हुए थे, जिनमें मुर्गों-बकरों को बेचने के लिए बन्द रखा जाता था, मन्दिर में बलि स्थान ठीक काली माता मूर्ति के पीछे था, यहाँ इनके गर्दन काटने के बाद सामने एक दूसरा स्थान था, जहाँ पर बोर्ड लगा था मुर्गा के माँस के टुकड़े करने के लिए ५०/- तथा बकरे के शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े करने के ३००/-रूपये। माँस कटता रहता है तथा पानी की नलियों द्वारा उस रक्त को उस स्वच्छ जल धारा में बहा दिया जाता है ये है हिन्दू धर्म का स्वरूप....। एक विशेष घटना और इसी प्रकार की है नेपाल के तराई के क्षेत्र में बिहार की सीमा से लगता हुआ एक स्थान है, जहाँ पर एक गढ़ी माता का मन्दिर है, इस स्थान पर चार वर्ष में एक विशेष मेला लगता है, जहाँ पर कई एकड़ भूमि में कई लाख पशुओं की सामूहिक बलि दी जाती है। इस वर्ष भी लगभग ५ लाख कटड़े-भैंसों की बलि दी गई। ५ लाख की संख्या तब रही जब भारत सरकार ने सीमा पर प्रतिबन्ध लगाया कि इस बलि के लिए भारत से पशुओं को न जाने दिया जाए। क्योंकि बलि के लिए अधिकांश पशु बिहार व उत्तरप्रदेश से जाता था और यदि प्रतिबन्ध न रहता तो कल्पना कर सकते थे कि बिना प्रतिबन्ध के कितना पशु धर्म के नाम पर कटता होगा। मैं तबसे एक बात अपने व्याख्यान इत्यादि में कहा करता हूँ कि दुनियाँ में जो गलत कार्य (पाप) सामान्य स्थिति में नहीं कर सकते, वे सब धर्म की आड़ में होते हैं। भांग पीने वाला भोले बाबा की जय बोलकर, शराब पीने वाला

काली या भैरव बाबा की, लीला रचाने वाले कृष्ण-गोपियो की जय बोलकर इन अनैतिक कृत्यों को करते हैं। जब सुनामी लहरें आयी थी, उस समय भू-गर्भ वैज्ञानिकों के पत्र-पत्रिकाओं में लेख आये थे कि ये इस तरह की जो प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं, उनमें ये प्रतिदिन होने वाली निरीह पशुओं की हत्या के कारण जो उनके भय के कारण निकलने वाली चीत्कार, करुणामयी रुदन के द्वारा जो कम्पन पैदा होता है, वह भी प्रकृति में असन्तुलन पैदा करता है।

त्रासदी से पीड़ित और दुर्गम स्थानों पर कठिनाइयाँ झेल रहे लोगों तक राहत सामग्री पहुँचाना अपने आप में एक अति कठिन काम था। सभा के आदेश से हमने वही कार्य करने की ठान ली। २३ मई को हम लोग प्रात: ३ बजे जग गये क्योंकि चार (४) बजे हमको राहत वितरण हेतु अपने निश्चित स्थान पर पहुँचना था। हम लोग शौचादि से निवृत्त होकर बिना नहाएँ ही क्यों उस दिन पानी बहुत थोडा था, ठीक चार बजे जहाँ पर गाड़ी जानी थी, वहाँ पहुँच गये। लगभग ४:३० बजे प्रात: मैं (कर्मवीर), आचार्य नन्दकिशोर जी, ब्र. प्रभाकर जी, ब्र. सोमेश जी, पं. कमला कान्त आत्रेय जी, पं. माधव जी (प्राध्यापक), पं. तारा जी ये दोनों लोग गुरुकुल कांगडी के स्नातक हैं तथा राजकुमार जी आदि अन्य एक दो व्यक्ति बस में सवार होकर चल दिए। रास्ते के लिए कुछ सूखी खाद्य सामग्री साथ ले रखी थी। लगभग ७:३० बजे एक जगह मार्ग में ही रुक कर प्रात:राश किया फिर शीघ्र ही चल दिये, लगभग ११:३० बजे सिंगेटी बाजार पहुँचे, रास्ता बड़ा ही दुर्गम था, लगभग १०० किमी. का तो रास्ता ऐसा था जिसमें केवल अभी पत्थर डले थे सड़क पक्की नहीं बनी थी, इस पर चलते रहे सिंगेटी पहुँचने से काफी पहले ही सड़क के दोनों ओर के मकान प्राय: ध्वस्त पड़े दिखाई देते थे। सिंगेटी पहुँचे, यहाँ भी यही हाल था। लगभग पूरा नगर ध्वस्त था, कोई भी मकान-दुकान ठीक नहीं बचा था, वहाँ पर कृष्ण जी आर्य पहले से उपस्थित थे। उन्होंने एक दुकान से सामान खरीद कर एक ट्रक गाडी में रखवाकर उस गाँव में भेज दिया था। जिस दुकान से सामान खरीदा था वो काफी टूटी हुई थी। किसी प्रकार से कुछ सामान सुरक्षित था। उस दुकानदार का भुगतान कर हम चल दिए। इसी स्थान पर एक होटल था, भूकम्प से पूर्व यहाँ बहुत पर्यटक आते थे। होटल में लगभग ३५ लोग रुके हुए थे, होटल पहाड़ की एकदम तलहटी में था, पहाड़ से भूकम्प के कारण विशाल पत्थर गिरे, सारा होटल पत्थरों के नीचे दब गया, अभी तक मलबा भी नहीं हटाया गया था, सम्भवत: सारी लाशें उसी के अन्दर दबी पड़ी होंगी। भूकम्प से जितनी हानि नेपाल में हुई है, उसकी भरपाई तो विश्व के सम्पन्न राष्ट्र मिलकर करें तब कुछ भरपाई हो सकती है। परोपकारिणी सभा की जागरूकता इस बात से स्पष्ट होती है कि अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता बिना विलम्ब किये पहुँचाई, बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचाई और तत्परता के साथ पहुँचाई।

सिंगोटी बाजार से जहाँ हमें जाना था, वह गाँव इस स्थान से ७ किमी. की ऊँची पहाड़ी पर था। रास्ता कच्चा व बड़ा खतरनाक था। जब हमारी गाड़ी उस पहाड़ पर चढ़ रही थी तो कई बार ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद यह यात्रा जीवन की अन्तिम यात्रा हो। इस चढ़ाई की कठिनाई का पता इस बात से भी लगाया जात सकता है कि ७ किमी. के इस दुर्गम रास्ते से सामान पहुँचाने के ट्रक वाले ने ८०००/- नेपाली रूपये (भारतीय ५ हजार) लिए। वास्तव में यह पाँच हजार रूपये ७ किमी. के नहीं एक बड़े जोखिम (खतरे) के थे। हम लोग पहाड़ पर लामीडाँडा नामक गाँव पहुँचे, वहाँ पर बहुत लोग उपस्थित थे, सब लोग हमको देखकर बड़े प्रसन्न हुए। सब लोग हमारी व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी परिवारों को पहले से कूपन वितरित कर दिये गये थे। परिवार का एक सदस्य कूपन लेकर आता तथा धन्यवाद देकर सामान लेकर चला जाता। यहाँ पर कोई सज्जन महानुभाव हमसे कई दिन पहले पहुँचे थे, उन्होंने भी सभी परिवारों को ७-७ किग्रा. चावल वितरित किये थे। कृष्ण जी भी इसी गाँव के रहने वाले थे। अपने घर पर ही भोजन की व्यवस्था कर रखी थी, हम सभी ने भोजन किया, बड़ा स्वादिष्ट भोजन घर की माताओं ने बड़े प्रेम से कराया। इसी गाँव के लगभग सभी घर गिर चुके थे। ग्रामवासी या तो टैंटों में या फिर गिरे हुए मकानों की टीन इत्यादि को इकट्ठा कर पेडों से लकडी काट अस्थाई घर बनाकर रह रहे थे।

यहाँ से लगभग तीन बजे हम लोग काठमाण्डू के लिए चले, कुछ दूर ही चले कि गाड़ी खराब हो गई। सब लोग तो गाड़ी ठीक होने की प्रतीक्षा करते रहे, मैं प्रभाकर जी, सोमेश जी पैदल ही पहाड़ी रास्ते से जल्दी-जल्दी उतरकर नीचे बहती कोसी नदी में स्नान किया, तब तक गाड़ी भी ठीक होकर आ गई, हम लोग देर रात ११ बजे काठमाण्डू आर्य समाज पहुँच गये।

२४ मई की सांय ७ बजे हम लोग अपने देश की तरफ चले प्रातः ५ बजे हम सोनौली भारत नेपाल की सीमा पहुँचे, वहाँ से एक जीप पकड़कर गोरखपुर पहुँचे, वहाँ से ब्र. सोमेश जी रेलगाडी से मैनपुरी के लिए चले गये। हम लोग बस पकड़कर लखनऊ पहुँचे। आचार्य नन्दकिशोर जी ने यहाँ से दिल्ली के लिए तथा ब्र. प्रभाकर जी ने बिजनौर के लिए बस पकड़ी तथा मैंने लखनऊ से जयपुर के लिए बस पकड़ी। कानपुर पहुँचकर जाम में बस फँस गई, वहाँ से चले इटावा में रात्री में बस खराब हो गई, वहाँ से चले आगे चलकर आगरा से आगे बस का टायर पंचर हो गया, यहाँ से आगे चले पता चला कि गुर्जर आन्दोलन के कारण आगरा जयपुर हाईवे बन्द कर दिया गया। गर्मी भी त्वचा जला देने वाली थी, इस प्रकार काठमाण्डू से अजमेर बस तक का सफर २ दिन, दो रात (४८ घन्टे) में तय किया। गर्मी के कारण कष्ट भी बहुत हुआ। पर मन में संतोष था कि हाँ कुछ अच्छा करते हुए द्वन्द्वों को सहन करना ही तप है, जो मानव जीवन की उन्नति का कारण है।

इसी पूरी यात्रा से एक विशेष अनुभव हुआ कि हमें कभी भी किसी प्रकार का धन-बल, शारीरिक बल, जल बल, रूप आदि पर कोई घमण्ड नहीं करना चाहिए क्योंकि न जाने किस वक्त इस परिवर्तनशील संसार में क्या घटना घट जाए। क्षणों की आपदा करोड़पतियों को सड़क पर खड़ा कर देती है। भूख-प्यास के मारे कटोरा हाथ में आ जाता है। शारीरिक बलवान बैसाखियों पर आ जाते हैं, रूपवान ऐसे कुरूप हो जाते हैं कि उनकी तरफ कोई देखना तक नहीं चाहता। परमात्मा से प्रतिक्षण यही प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर हमें शक्ति-भक्ति-सामर्थ्य प्रदान करे कि यह शरीर सदा दूसरों की सेवा कर सके। इति।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

भव्य ऋषि मेला-२०१५

प्रतिवर्ष की भांति २०, २१ व २२ नवम्बर २०१५, शुक्र, शनि, रविवार को ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में आयोजित होगा।

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१८५. श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	४०.००
१८६. मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७. योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८. ध्यान (सी.डी.)	३०.००
१८९. योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०. ध्यान (कैसेट)	३०.००
श्री रावसाहब रामविलास शारदा	
१९१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००
डॉ. रामप्रकाश आर्य	
१९२. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००
महर्षि गार्ग्य	
१९३. सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००
डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा	
१९४. वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००
महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि	
१९७. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१९९. महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	
२००. महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	
Prof. Tulsi Ram	
201. The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202. Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203. A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204. An Examination of Vallabha Sect	20.00
205. Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206. Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207. Bhranti Nivarana	35.00
208. **Atmakatha-** Swami Dayanand Saraswati	20.00
209. Bhramochhedan	5.00
210. Chandapur Fair	5.00
DR. KHAZAN SINGH	
211. Gokaruna Nidhi	12.00
DEENBANDHU HARVILAS SARDA	
212. Life of Dayanand Saraswati	200.00
SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI	
213. Dayanand and His Mission	5.00
214. Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५. पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००
आचार्य उदयवीर शास्त्री	
२१६. जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
श्री गजानन्द आर्य	
२१७. वेद सौरभ	१००.००
२१८. Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९. मनुस्मृति	३००.००
२२०. महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३. माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४. शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५. शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६. यजुर्वेद-भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७. यजुर्वेद-भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८. उणादिकोष	८०.००
२२९. दयानन्द लहरी	५०.००
प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०. वेदाध्ययन (भाग-१)	६.००
२३१. वेदाध्ययन (भाग-२)	७.००
२३२. वेदाध्ययन (भाग-१०)	६.००
२३३. प्रार्थना सुमन	४.००
२३४. ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५. कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६. पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७. प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
२३८. भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९. विनय सुमन (भाग-३)	६.००
२४०. वेद सुधा	८.००
२४१. वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२. वैदिक रश्मियाँ (भाग-२)	६.००
२४३. वैदिक रश्मियाँ (भाग-३)	५.००
२४४. वैदिक रश्मियाँ (भाग-४)	९.००
२४५. वैदिक रश्मियाँ (भाग-५)	६.००
२४६. Quest for the Infinite	20.00
२४७. वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८. गंगा ज्ञान धारा (भाग-१)	
२४९. गंगा ज्ञान धारा (भाग-२)	१६०.००
२५०. गंगा ज्ञान धारा (भाग-३)	१७०.००
२५१. अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२. कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३. कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४. निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५. मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६. कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७. जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८. महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९. श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०. धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
विविध ग्रन्थ	
२६१. नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२. उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३. आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४. मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५. आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६. जीवन का उद्देश्य	२०.००

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००
२९५.	सत्यासत्य निर्णय	२५.००
२९६.	कलैण्डर–गायत्री मन्त्र, सन्ध्या सुरभि, महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ–प्रत्येक	२५.००
२९७.	ओ३म् का स्टीकर	१०.००

ऋषि मेला २०१५ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २०,२१,२२ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१५ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

ईश्वर: जैन एवं वैदिक दृष्टि

-डॉ. वेदपाल, मेरठ

[वर्ष २०१३ में ऋषि - मेले के अवसर पर आयोजित वेद-गोष्ठी में प्रस्तुत एवं पुरस्कृत यह शोध लेख पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है।]
-सम्पादक

मनुष्य के अस्तित्वकाल से ही उसके विचारणीय महत्त्वपूर्ण विषयों में एक है- ईश्वर। ईश्वर के सम्बन्ध में कल्पना बाहुल्य उपलब्ध है। जिसका आधार देश, मत - पन्थ तथा धार्मिक विश्वास हैं। इसी कारण उसे अनेक नाम से सम्बोधित किया गया है। ईश्वर के स्वरूपविषयक कल्पनाएं भी कम मनोरंजक नहीं हैं। शिव के किरात रूप की कल्पना इसका निदर्शन है। इसी प्रकार न कुछ से सब कुछ (अर्थात् अभाव से भाव) करने वाला-मानना (इस्लाम के अनुसार)।

सामान्यत: ऐश्वर्य सम्पन्न, जगत् कर्त्ता, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा जीव के कर्मफल प्रदाता के रूप में उसे स्वीकार किया जाता है। एक मत-धर्म ऐसा भी है जो उक्त जगत्कर्तृत्व आदि रूप में तो उसकी सत्ता स्वीकार नहीं करता, किन्तु सर्वज्ञ गुण सम्पन्न व्यक्ति को ही जिसने अर्थत: और तत्त्वत: आत्मतत्त्व को जान लिया तथा कर्म से विप्रमोक्ष हो गया है उसे सर्वज्ञ[1] केवली/ईश्वर कहा गया है। यद्यपि यहाँ यह विशेषण स्मरणीय है कि तत्त्वसूत्र (उमास्वामी विरचित जैनधर्म के प्रमुख दार्शनिक ग्रन्थ) तथा आचार्य कुन्दकुन्द विरचित 'समयसार' (जैनमत का प्रमुख आध्यात्मिक ग्रन्थ) में ईश्वर पद का प्रयोग नहीं हुआ है।

यह सर्वानुमत है कि संसार में जितने भी कार्य पदार्थ हैं, उनसब का कोई चेतन कर्त्ता है। जैसे-घड़ी, वस्त्र, मोटरकार, कागज, लेखनी आदि पदार्थ किसी न किसी व्यक्ति, सत्ता द्वारा बनाए गये हैं। इनमें से कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है, जिसे किसी ने बनाया न हो और वह स्वयं बन गया हो अथवा अनादि निधन हो। जो पदार्थ जितना व्यवस्थित और बेहतर ढंग से डिजायन किया गया है उसका कर्त्ता उतना ही बुद्धिमान् माना जाता है।

इस दृश्य संसार के लिए सृष्टि, जगत् तथा संसार शब्दों का प्रयोग किया जाता है। सृष्टि शब्द 'सृज् विसर्गे' धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है-रची हुई, पैदा हुई। जगत् शब्द का अर्थ है- 'गच्छतीतिजगत्'। संसार का अर्थ भी संसरणशील है[३] संसार का कोई भी जड़ पदार्थ ऐसा नहीं है, जिसमें स्वत: गति हो अथवा वह संसरणशील हो या स्वयं ही निर्मित हो गया हो। अर्थात् इन पदार्थों का स्वभाव बनना गतिशील होना हो। इनमें बनना या इनका गतिशील होना किसी अन्य बनाने वाले अथवा इन्हें गति देने वाले की अपेक्षा रखते हैं।

सृष्टि एवं सृष्टा ईश्वर के विषय में जैन सिद्धान्तों को निम्नवत् समझा जा सकता है-

१. सृष्टि नाम भले ही प्रयोग किया जाए, किन्तु यह सृष्ट नहीं है। अणु-स्कन्ध के स्वाभाविक परिणमन से पुद्गल की उत्पत्ति होती है, किन्तु यह अकृत है। स्वभावत: अनादिनिधना है। अत: स्रष्टा अपेक्षित नहीं।

२. सृष्टि प्रयोजन कर्मफल भोग के सन्दर्भ में- कर्म स्वत: फलप्रदाता है और कर्त्ता जीव स्वयं भोक्ता है, इसमें किसी अन्य के हस्तक्षेप का अवकाश नहीं।

३. सृष्ट वस्तु के आधार पर कार्यत्व हेतु- **'क्षित्यादिकं सकर्तृकं घटवत्'** सयुक्तिक नहीं है, क्योंकि जिस प्रकार इस जगत् का कर्त्ता इष्ट है, उसी प्रकार ईश्वर का भी कोई कर्त्ता होना चाहिए। इस प्रकार अनवस्था दोष होगा।

४. यदि ईश्वर सृष्टि का स्वभावत: रूचिवशात् या कर्मवशात् कर्त्ता है तो ईश्वर का स्वातन्त्र्य कहाँ? क्योंकि उसे तो उक्त कारणो से चाहे-अनचाहे सृष्टि करनी ही होगी। तब तो वह स्वतन्त्र रहा ही नहीं।

५. जैनमत के संयमप्रधान तपोधर्म होने से ईश्वर के अस्तित्व पर विचार ही नहीं किया गया है अथवा उसकी आवश्यकता ही अनुभव नहीं की गयी, किन्तु जैन मत आध्यात्मिक (आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत समयसार) एवं दार्शनिक (उमास्वामी प्रणीत तत्वार्थसूत्र तथा आचार्य समन्तभद्र प्रणीत आप्तमीमांसा प्रभृति) ग्रन्थों में ईश्वर का निषेध भी उपलब्ध नहीं है। अत: कहा जा सकता है कि- ईश्वरपद ही वहाँ अपराभृष्ट है भले ही आज व्यवहार में

जिनेश, जिनेश्वर, जिनभगवान् जैसे शब्दों का प्रयोग क्यों न किया जाता हो।

जैन मत में ईश्वर से मिलती-जुलती अवस्था केवली की है इसे ही सर्वज्ञ कहा गया है। मोह का क्षय होने पर अन्तर्मुहूर्त तक क्षीणकषाय रहकर एक साथ ज्ञानावरण-दर्शनावरण तथा अन्तराय क्षय होने पर केवल ज्ञान प्राप्त होता है।[४] वह केवली ही बन्ध हेतुओं (मिथ्यात्व आदि) के अभाव होने तथा तप आदि निर्जरा हेतुओं द्वारा पूर्वोपार्जित कर्मों का विप्रमोक्ष होकर मोक्ष को प्राप्त होता है।[५] ऐसा मुक्तात्मा ही सर्वज्ञ पद भाक् है।

जैन मत में ईश्वर की चर्चा न होने के सम्बन्ध में एक अन्य दृष्टिकोण भी ध्यातव्य है, जिसके अनुसार- ईश्वर विषयक अवधारणा का मूल स्रोत वेद है। जैन मत वेदोपनिषद् से पूर्व भारत में प्रचलित मुनिजनों के संयमात्मक तपोधर्म से उदित है।[६] अर्थात् उस समय ईश्वर की संकल्पना ही नहीं थी।

वैदिक दृष्टि- ईश्वर के सम्बन्ध में वैदिक दृष्टि सुस्पष्ट है। तदनुसार प्रकृति के परमाणुओं -(जो कि जड़ हैं अतः अक्रिय हैं।) को अव्यक्तावस्था से व्यक्तावस्था में लाने वाली चेतन सत्ता ईश्वर पद वाच्य है। जिस प्रकार लौकिक घट-पट आदि कार्य पदार्थों का उपादान कारण मृत्तिका-तन्तु आदि सर्वस्वीकृत हैं इन कार्य पदार्थों का कर्त्ता-निमित्त कारण कुम्भकार तन्तुवाय आदि हैं। उसी प्रकार इस कार्य जगत् का उपादान प्रकृति के परमाणु तथा निमित्त कारण ईश्वर है।

दृश्यमान जगत्/संसार कार्य है। किसी भी कार्य/पदार्थ के सम्पन्न हेने में तीन कारण सम्भव हैं। सर्वप्रथम उसके लिए उसका मूल, जिसके रूपान्तरित होने पर वह वस्तु बनती है। जिस प्रकार पार्थिव घर के लिए मृत्तिका आदि। इसे उपादान कारण कहा जाता है। दूसरा कारण है, जिसके बनाने से कोई वस्तु बने और न बनाने से न बने तथा वह स्वयं रूपान्तरित न हो, अपितु किसी अन्य पदार्थ-उपादान को कुछ बना देवे। जैसे कुम्भकार मृत्तिका को घट रूप में रूपान्तरित कर देता है। अतः वह उसका निमित्त होने से निमित्त कारण कहा जाता है। तीसरा कारण है- साधारण, जिन साधनों का उपयोग पदार्थ निर्माण में सामान्येन अपेक्षित रहता है वह साधारण होने से साधारण कारण कहलाता है। उपादान के गुण पदार्थ में रहते हैं।

संसार में दो ही प्रकार के पदार्थ हैं- १. चित्-चेतन। २. अचित्-अचेतन-जड़।[७] अचेतन पदार्थ अक्रिय हैं, उनसे स्वतः किसी अन्य पदार्थ का निर्माण नहीं होता अथवा यों कहें कि वह किसी पदार्थ का निर्माण नहीं कर सकते। जैसे- पृथिवी जड़ है, इससे बिना बनाये ईंट, घर आदि पदार्थ कभी नहीं बन सकते। जब कोई चेतन कर्त्ता इच्छापूर्वक प्रयत्न करता है तब उससे ईंट-घर आदि पदार्थ बना लेता है। इसी प्रकार कपास से तन्तु/वस्त्र आदि चेतन कर्त्ता के इच्छा-प्रयत्न से ही बनते हैं। जब यह छोटे से छोटे पदार्थ भी चेतन कर्त्ता के बिना नहीं बनते, तब इतने व्यवस्थित संसार/ब्रह्माण्ड का निर्माण बिना चेतन कर्त्ता के किस प्रकार सम्भव है। स्कन्ध के स्वतः परिणमन से संसार का निर्माण मानने वाले पार्थिव परमाणुओं (पुद्गल/स्कन्ध) से स्वतः घर का निर्माण क्यों नहीं मानते अथवा बिना कुम्भकार/ तन्तुवाय के स्वयं बनते हुए घट-पट क्यों नहीं दिखा देते? स्वयं केलिए भवन व वस्त्र क्यों बनाते हैं? अर्थात् सृजन क्रिया के लिए चेतन कर्त्ता अपेक्षित है। संसार में जितने भी चेतन कर्त्ता हैं, उनका ज्ञान व सामर्थ्य सीमित है। अतः इतना व्यवस्थित नियमबद्ध संसार[८] जिसका कर्त्ता सीमित ज्ञान प्रयत्न वाला (मनुष्य) होना सम्भव नहीं। इसका कर्त्ता निश्चय ही सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ होना चाहिए। उसी का नाम ईश्वर है। यदि ईश्वर के स्थान पर कोई अन्य संज्ञा रखें तब भी संज्ञा उक्त गुणयुक्त ही होगा। अन्य संज्ञा पर भी वही प्रश्न सम्भव है। अतः अन्वर्थ संज्ञा के प्रयोग से कोई हानि नहीं।

जगत् कारणता विषय में कार्यकारण सिद्धान्त महत्त्वपूर्ण है, किन्तु जैन दर्शन में इस पर स्पष्ट विचार उपलब्ध नहीं है। केवल जीव द्वारा किए कर्म जिनसे कार्मण वर्गणाएं बनती हैं और वह पुद्गल रूप में रहती हैं, क्योंकि ''कर्म-पुद्गल द्रव्य का पर्याय है....अर्थात् कर्मरूप से परिणत कार्मण वर्गणाओं की सत्ता पौद्गलिक रूप में बनी रहती है[९]''। कार्य कारण सिद्धान्त पर जैन की अपेक्षा बौद्धाचार्यों ने अधिक विचार किया है। कल्याण रक्षित (८२९ ई.) ने ईश्वर भंगकारिका में ईश्वरास्तित्व का निरसन किया है। इनके शिष्य धर्मोत्तराचार्य (८४७ ई.) ने भी कल्याणरक्षित की परम्परा का अपने ग्रन्थों (अपोह नामसिद्धि, क्षणभंगसिद्धि) में पुष्ट किया है।

कार्य कारण सिद्धान्त का खण्डन करने वालों ने अग्नि

की कारणता के खण्डन (वह्निदाह का कारण है- **अन्वय व्यतिरेक....किन्तु अरणि सत्त्वेवह्निसत्ता..., मणिसत्त्वेवह्निसन्ता...., तृणसत्त्वेवह्निसत्ता....** अन्वय तो बनेगा किन्तु व्यतिरेक नहीं। **यथाअरण्यभावे वह्न्यभावः...., मण्यभावे वह्न्यभावः..., तृणभावे बह्न्यभावः नहीं....**) के द्वारा अन्य सभी प्रकार की कारणता का भी खण्डन किया है। वस्तुत: यह सद् हेतु न होकर हेत्वाभास है, क्योंकि अग्नि दाह के प्रति स्वरूपत: कारण नहीं, अपितु शक्ति मत्त्वेन कारण (शक्तिवाद मीमांसक मत है) है। अर्थात् कारणावच्छेदकता धर्म अरणित्व-मणित्व-तृणत्व न होकर **वह्न्यनुकूलैकशक्तिमत्त्वे सति बह्निसत्ता-अन्वयः वह्न्यनुकूलैक शक्तिमत्त्वाभावे सति बह्न्यभावः- व्यतिरेकः।** इस प्रकार हेत्वाभास का वारण हो जाता है।

इसी प्रकार अकस्मात् वाद (पूर्वपक्ष-'अनिमित्ततो भावोसत्तिः कण्टक तैक्ष्ण्यादिदर्शनात्' न्याय ४.१.२२ **प्रत्याख्यान-'अनिमित्तनिमित्तत्वान्नानिमित्ततः', 'निमित्तानिमित्तयोरर्थान्तर भावादप्रतिषेधः'** २३-२४)। का प्रत्याख्यान न्याय के साथ ही उदयनार्च ने न्याय कुसुमाञ्जलि १.५ में किया है-

हेतुभूतिनिषेध न स्वानुपाख्यविचिर्न च।
स्वभाववर्णना नैवमवचेर्नियत त्वतः।।

प्रस्तुतकारिका में उदयनाचार्य ने अकस्मात्-अकारणात् की पाँच व्याख्याओं **१.** कारणं विना भवति **२.** कारण व्यतिरिक्ताद्भवति प्रथम के दो अर्थों-**क**- हेतु का निषेधक **ख.** उत्पत्ति का निषेधक तथा द्वितीय के तीन अर्थों-वा-स्वस्माद् भवति घ. अलीकाद भवति और स्वभावाद् भवति-इन पाँचों का खण्डन एक ही- **अवधेर्नियतत्वतः= 'नियतकालावधिककार्यदर्शनात्'** द्वारा किया है। कार्यों की स्थिति नियतकाल तक ही दिखाई देती है। कार्य नित्य रहने वाला पदार्थ नहीं है। यह स्थिति तभी बन सकती है, जब कार्यों का कोई कारण माना जाए।

१. यदि उत्पत्ति ही न होती हो या २. उसका कोई कारण न हो तो उन्हें नित्यपदार्थ के समान होना चाहिए। ३. यदि स्वयं अपने से अथवा ४. अलीक वन्ध्यापुत्र सदृश मिथ्या पदार्थ से अथवा ५. स्वभाव से कार्य (जगत्) की उत्पत्ति मानी जाए तो कार्य के नाश का कोई कारण नहीं बनता। क्योंकि जिन पदार्थों का कारण कोई भाव पदार्थ है। उस कारण के नाश होने से कार्य का नाश हो जाता है। परन्तु स्वस्मात्-अलीकात्-स्वभावात् (...स्वानुपारव्यविधिर्न च। स्वभाववर्णनाा नैवम्...) से उत्पन्न होने की स्थिति में किसके नाश से कार्य का नाश माना जाएगा?

इसलिए नाश का सम्भव न होने से इन तीनों पक्षों में भी कार्य कादाचित्क-अकस्मात्-क्यों है? इसका उपपादन नहीं किया जा सकता है। इसलिए **१.** न कार्य के हेतु या कारण का निषेध किया जा सकता है और **२.** न उसकी उत्पत्ति या भवन का खण्डन हो सकता है (हेतुभूति निषेधो न) इसलिए अकस्मात् भवति यह कथन करना सर्वथा युक्तिविरुद्ध है।

सांख्यदर्शन में पूर्वपक्ष के रूप में उपन्यस्त **'ईश्वरासिद्धेः'** १.९२ **नास्तिकों का सर्वप्रमुख एवं प्रिय प्रमाण है। जबकि यह सूत्र पूर्व पक्ष है तथा उत्तर पक्ष सांख्य में ही द्रष्टव्य है,** कि उदयनाचार्य ने इस पूर्वपक्ष के समाधानार्थ आठ हेतु उपस्थित किए हैं-

कार्यायोजन-घृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः।
वाकयात् संख्या विशेषाच्च साध्यो विधिवदव्ययः।।[१०]

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास में प्रश्नोत्तर के रूप तथा द्वादश समुल्लास में आस्तिक-नास्तिक के संवाद (प्रश्नोत्तर) के माध्यम से जगत् कारण (निमित्त) ईश्वर के स्वरूप को सुव्यक्त कर दिया है। जिज्ञासु वहीं देख सकते हैं।

वेद में ईश्वर को 'अज एकपात्'[११] 'अकायमव्रणम्'[१२] सर्वज्ञ वेद भुवनानि[१३] विश्वा

साक्षी-'अनश्नन्न्यो अभिचाकशीति'[१४] सृष्टिकर्त्ता- 'य इदं विश्वं भुवनं जजान'[१५] 'हृदयगुहा में दर्शनयोग्य - वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा यत्'[१६] अमर्त्य-'अमर्त्योमर्त्येना सयोनिः'[१७] आदि विशेषण विशेषित रूप में वर्णित किया गया है।

सक्षेप में कहा जा सकता है कि जैन मतानुसार प्रत्यक्ष दृश्य जगत्/सृष्टि अनादिनिधना है। वहाँ न तो ईश्वर की स्थापना है और न ही निषेध । हाँ केवली पुरुष/तीर्थंकर अवश्य सर्वज्ञ कहे गए हैं। व्यावहारिक दृष्टि से विचारने पर स्पष्ट है कि जगत्/ सृष्टि कार्य है। इसका मूल उपादान प्रकृति तथा निमित्त कारण सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ ईश्वर है। नास्तिकों द्वारा कार्यकारण के निषेधक हेतु मात्र हेत्वाभास

हैं। वेद में ईश्वर को सर्वज्ञ, न्यायकारी, सृष्टिकर्त्ता, अज, अमर्त्य आदि विशेषण विशेषित कहा गया है।

सन्दर्भः

१. तत्रैश्वर्य विशिष्टः संसार धर्मैरीषदप्यस्पृष्टः।
परो भगवान् परमेश्वरः सर्वज्ञः सकलजगद्विधाता।।
न्यायसार आगम परिच्छेद

२. दोषावरणयोहीनिर्निश्शेषास्त्यतिशायनात्ः।।
क्वचिद्यथा स्वहेतुभ्यो बहिरन्तर्मलक्षयः।।
सूक्ष्मान्तरित दूरार्थाः प्रत्यक्षः कस्यचिद्यथा।
अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरितिसर्वज्ञ संस्थितिः।।
समन्तभद्र, आप्तमीमांसा, परिच्छेद १,४-५

३. स्वोपात्तकर्मवशादात्मनो भवान्तरावाप्तिः संसारः

४. मोहक्षयाज्ज्ञान दर्शनावरणान्तराय क्षयाच्च केवलम्- तत्त्वार्थसूत्र १०.१

५. बन्ध हेत्वभाव निर्जराभ्यां कृत्स्न कर्मविप्रमोक्षो मोक्षः - १०.२

६. भारतीय संस्कृतिकोश-सम्पादक - पं. महादेव शास्त्री जोशी, खण्ड-३ पृ.३६७

७. जीव-पुद्गल-दोनों भिन्न-भिन्न हैं-समयसार पूर्वरंग २३-२५, टीकायाम् चेतन-जड़

८. आकृष्टि शक्तिस्तु महीयत्, स्वस्थं गुरुस्वाभिमुख स्वशक्त्या।
आकृष्यते तत् पततीव भाति, समे समन्तात् वच पतत्ययं रवेः।।
-भास्कराचार्य, सिद्धान्त शिरोमणि १९-६ (समय-११७१ वि.)

९. प्रो. उदयचन्द्र जैन,-'आप्त मीमांसा' १.४ की व्याख्या, पृ. ७१

१०. न्यायकुसुमाञ्जलि ५.१

११. यजु. ३४.५३

१२. वही ४०.४

१३. वही ३२.१०

१४. ऋक् १.१६४.२०

१५. अथर्व. १३.३.१५

१६. अथर्व. २.१.१

१७. ऋक् १.६४.६

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। -संपादक

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

पुस्तक परिचय

१. पुस्तक - इतिहास प्रदूषण

लेखक - राजेन्द्र जिज्ञासु

प्रकाशक - पण्डित लेखराम वैदिक मिशन अकोला

पृष्ठ - १६० **मूल्य**- १००/-

प्राप्ति स्थान - डॉ. अशोक आर्य, १०४, शिप्रा अपार्टमेंट, कोशाम्बी जि. गाजियाबाद, उ.प्र. २०१०१०

मो. नं. - ९७१८५२८०६८

मनुष्य समाज के लिए उसके इतिहास का बड़ा महत्त्व है। इतिहास अर्थात् अतीत का वृत्तांत । यह वृत्तान्त जितना सत्य से परिपूर्ण होता है उतना ही महत्वपूर्ण होता है। सत्य इतिहास से अनेक अनसुलझे रहस्य सुलझ जाते हैं। हमारे देश का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है, हम अपने राष्ट्र के इतिहास पर गर्व कर सकते हैं। हमारा ही इतिहास ऐसा है जो करोड़ों वर्षों पुराना है। किन्तु खेद इस बात का है कि इस इतिहास को कुछ स्वार्थी लोगों ने प्रदूषित कर दिया है। इतिहास को प्रदूषित करने वालों का इसको प्रदूषित करने में अज्ञान कम स्वार्थ अधिक है। स्वार्थी लोग प्रायः ऐसा कर दिया करते हैं।

हमारे राष्ट्र में अनेक महापुरुष पैदा हुए हैं। इन महापुरुषों में महर्षि दयानन्द विरले महापुरुष हैं। एक अकेले अपने हृदय की निर्मलता व ईश्वरनिष्ठा के बल पर अल्पकाल में कितना कुछ कर गये वह समस्त विश्व के सामने है। महर्षि ने जनकल्याण के लिए 'आर्य समाज' का गठन किया। जिसमें अनेक राष्ट्रभक्त, वेदभक्त, ईश्वरभक्त, सुधारक जुड़ते चले गये। आज तक आर्य समाज में अनेकों हीरे रत्न हुए हैं और इनके साथ इनके वा आर्यसमाज के द्वेषी और घातक भी हुए हैं। आर्य समाज का इतिहास इसका गवाह है।

इतिहास को ठीक-ठीक रखा जाये, लिखा जाये, परोसा जाये यह न्याय है, उचित है। किन्तु आर्य समाज के साथ कुछ ऐसा नहीं हुआ अर्थात् आर्य समाज के इतिहास वा आजादी के इतिहास में प्रदूषण बहुत किया गया। इस प्रदूषण को देख आर्य जगत् के इतिहास के प्रति सदा सजग रहने वाले, युवाओं को प्रेरणा देने वाले अनेकों मौलिक ग्रन्थों को देने वाले प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने ''इतिहास प्रदूषण'' नाम से पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में लेखक ने अनेक इतिहास प्रदूषकों की चर्चा सप्रमाण की है। कैसे इतिहास को प्रदूषित किया गया, इस विषय में लेखक लिखते हैं- ''अब गत कई वर्षों से आर्य समाज में घुसपैठ करके कुछ लेखकों ने आर्यसमाज के इतिहास में बड़ी चतुराई से यूरोपियन ईसाई लेखकों की शैली से इतिहास प्रदूषण का अभियान छेड़ कर आर्यसमाज की यह पहचान समाप्त कर दी है। मीठा विष इस ढंग से, इस मात्रा में आर्यों को पिलाया गया कि आर्यसमाज को इतिहास-प्रदूषण, प्रक्षेप व मिलावट का पता ही नहीं चलता।''

इस पुस्तक में ऐसे तो अनेकों इतिहास प्रदूषकों की चर्चा की गई है जो कि इस पुस्तक को पढ़ने पर पाठकों को भी स्वयं अवगत हो जायेगी।

अपने सत्य इतिहास को जानने व इसमें क्या प्रदूषण हुआ व किसने किया इसकी जानकारी के लिए पाठकवृन्द इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

- सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

२. पुस्तक का नाम-मेवाड़ केसरी महाराणा संग्राम सिंह

रचयिता - यशपाल सिंह राठौर

मुद्रक - अम्बिका ऑफसेट, २८/९ प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

मूल्यः- १००=०० **पृष्ठ संख्या** - १६७

हिन्दी साहित्य में अनेक विधाएं हैं उनमें काव्य का अपना महत्त्व है। भाव, भाषा, लय, हावभाव की कड़ी विचारों को प्रभावित करती है। राजस्थान की धरा पर अनेक वीर, वीराङ्गनाओं ने देश-भक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया है। इतिहास इससे अछूता नहीं है। कवियों ने भी उन वीरों के प्रति काव्य-रचनायें की हैं। महाराणा प्रताप का शौर्य एवं वीरता हल्दीघाटी कविता के माध्यम से झलकती है। ऐसे मेवाड़ केसरी महाराणा संग्राम सिंह पर यशपाल जी ने खण्डकाव्य लिखा है। बन्धु-विद्रोह, सांगा का लोदी से युद्ध, रणथम्भौर विजय, बाबर और लोदी युद्ध, पुनर्युद्ध और विश्वासघात आदि अन्य बिन्दुओं के आधार, सैन्य कौशल, वीरता, देशप्रेम, शरीर पर अस्सी घाव होते हुए लोहा लेते हुए अमर होते हैं। काव्य की भाषा सरल व हृदयग्राही है। पाठक इसका रसास्वादन कर राणा सांगा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व से लाभान्वित होंगे। आर्यवीरों के लिए यह अनुपम पुस्तक हैं।

देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

परोपकार के कार्यों के प्रति समर्पित

एक प्रेरक व्यक्तित्व - माता सुशीला भगत जी

माता सुशीला भगत जी का जन्म १३ मई १९३९ में पाकिस्तान के रावलपिंडी शहर में हुआ। इनके पिता कैप्टन स्व. यशपाल जी चुघ तथा माता स्व. श्रीमती सीता बाई थी। स्व. कैप्टन यशपाल जी ने सेना से सेवानिवृत्ति के पश्चात् अपना सारा जीवन आर्य समाज को समर्पित किया हुआ था। आर्य समाज के अधिकारी होने के साथ-साथ ये हिन्दू शुद्धि सभा राम लीला मैदान, दिल्ली के उपप्रधान रहे। परिवार के अन्दर धार्मिक वातावरण होने के कारण बचपन में ही इन्हें वैदिक विचार विरासत में मिले। इनका विवाह १९५९ में दिल्ली में जालन्धर निवासी श्री गाकुल चन्द भगत जी के साथ हुआ। यहीं से माता सुशीला भगत जी की सामाजिक गतिविधियाँ शुरु हुई। माता सुशीला भगत जी ने विवाह के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश की चारों परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में पास की। इसकी प्रेरणा इन्हें अपने पिता जी से मिली जिन्होंने ७५ वर्ष की आयु में इन परीक्षाओं को पास किया था। इनके पति का व्यवसाय व्यापार है। माता सुशीला भगत जी ने स्वयं एक कुशल गृहिणी होते हुए अपने दो पुत्रों और एक पुत्री को बचपन से अच्छे संस्कार देकर सुयोग्य बनाया। इसी का यह परिणाम है कि इस परिवार में नित्य प्रति दैनिक यज्ञ होता है। माता जी की अनुपस्थिति में इनकी पुत्रवधुएं स्वयं दैनिक यज्ञ करती हैं। अपने पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करने के साथ-साथ इन्होंने समाज सेवा के कार्यों को भी जारी रखा। वर्तमान में माता सुशीला भगत जी स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर की पिछले कई वर्षों से प्रधाना हैं। इनके नेतृत्त्व में स्त्री आर्य समाज दिन-प्रतिदिन उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के १२५ वें निर्वाण दिवस पर २००८ में अजमेर में आयोजित कार्यक्रम में स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर को भारत वर्ष की सर्वश्रेष्ठ स्त्री आर्य समाज के सम्मान से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार को उन्होंने स्त्री समाज की सहयोगी बहनों के साथ जाकर प्राप्त किया। एक प्रशस्ति पत्र और महर्षि दयानन्द के चित्र का स्मृति चिह्न भेंट किया गया। इस उपलब्धि का श्रेय माता सुशीला भगत जी ने सभी बहनों को दिया। गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर, पंजाब की उपप्रधान तथा कन्या महाविद्यालय जालन्धर की अन्तरंग सदस्य के रूप में आप दोनों संस्थाओं की सेवा कर रही हैं। ऑल इन्डिया वूमैन एसोसिएशन जालन्धर मण्डल की वरिष्ठ उपप्रधाना के रूप में महिला सशक्तिकरण के लिए भी अपना सहयोग दे रही है। स्त्री आर्य समाज की तरफ से हर वर्ष दान एकत्र करके सभी गुरुकुलों और संस्थाओं को भेजा जाता है। स्त्री आर्य समाज की तरफ से एक गाय गुरुकुल टंकारा को, एक गाय गुरुकुल करतारपुर को तथा एक कमरे का निर्माण गुरुकुल करतारपुर में किया गया। परोपकारिणी सभा अजमेर में स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर की तरफ से एक कमरा तथा एक भोजनालय बनवाया गया। एक कमरे का निर्माण स्वयं इन्होंने अपने परिवार की तरफ से करवाया। अतिथि यज्ञ हेतु दस सदस्य उनके जन्मदिवस पर परोपकारिणी सभा अजमेर के लिए बनाए। परोपकारिणी सभा में पाण्डुलिपि के संरक्षण के लिए होने वाले व्यय को वहन करने की जिम्मेदारी भी इन्होंने उठाई है। माता सुशीला भगत जी ने स्वयं तथा स्त्री आर्य समाज की सहयोगी बहनों के सहयोग से गुरुकुल करतारपुर के १० ब्रह्मचारियों को अडॉप्ट किया हुआ है जिनका वार्षिक व्यय प्रति ब्रह्मचारी ३० हजार रूपये इनके द्वारा वहन किया जाता है। अपने नाम के अनुरूप सुशील, मधुरभाषी तथा कुशल वक्ता होने के कारण इनमें सबको साथ लेकर चलने की कला है। जहाँ कहीं से भी इन्हें आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में आमन्त्रित किया जाता है वहाँ वे नि:संकोच पहुँच कर अपना सहयोग देती हैं। इनका उद्देश्य जीवनपर्यन्त आर्य समाज तथा सामाजिक संस्थाओं की सेवा करना है। ऐसी कर्मनिष्ठ व धार्मिक वृत्ति वाली माता सुशीला भगत के दीर्घायु के लिए परोपकारिणी परिवार की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएँ।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३२ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक २०, २१, २२ नवम्बर २०१५, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३२ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- १६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २२ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेद वागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे ३० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २०, २१, २२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २० नवम्बर को परीक्षा एवं २१ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय ३० अक्टूबर, २०१५ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन हैं कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३२ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर,आचार्य विजयपालजी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी, कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी - शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

ऋषि के पग चिह्नों पर
हमारी गुजरात यात्रा-(२)

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

राजकोट से हमने महर्षि के जन्म स्थान टंकारा के लिये प्रस्थान किया। इस यात्रा में हमने महर्षि की उस यात्रा (सन् १८७५) के कुछ विशेष प्रसंगों के सिलसिले में महर्षि की देन के ऐतिहासिक महत्त्व को एक-एक पड़ाव पर कुछ-कुछ प्रकाश डालकर उद्घाटित किया। राजकोट के धर्मशाला चौक में महर्षि ने देश-भाषा (गुजराती) में व्याख्यान दिया था। इस व्याख्यान का विशेष प्रभाव पड़ा था। पं. लेखराम जी के इस कथन को गुजरात की धरती पर पहली बार उठाया गया। ऋषि के जीवन पर लिखने वाले किसी भी लेखक ने कभी यह नहीं बताया था कि पं. लेखराम जी ने गुजराती भाषा के लिए 'देशभाषा' शब्द का प्रयोग किया है। गुजरात की जनता को पहली बार यह जानकारी दी गई कि महर्षि दयानन्द प्रथम भारतीय विचारक सुधारक जो कभी सागर पार तो नहीं गया था परन्तु उनका चित्र सबसे पहले अमरीका के एक पत्र Sunday Magazine (सण्डे मैगज़ीन) में छपा था।

गुजरात निवासी धरती पुत्र महर्षि दयानन्द की इस विलक्षणता को जानकर गौरवान्वित हुए। टंकारा पहुँचने पर टंकारा आर्य समाज, आर्यवीर दल तथा टंकारा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ गुजरात सभा के मन्त्री जी ने हमारा स्वागत किया। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट में हमें ठहराया गया। आर्य समाज टंकारा में एक कार्यक्रम रखा गया। श्रीमान् धर्मवीर जी तथा श्रीयुत् ओममुनि जी ने अपने विचार रखे। श्री पं. भूपेन्द्र जी के भजन हुए।

मुझे कुछ कहने को कहा गया। मैंने अभी ये शब्द ही कहे, ''कुछ वर्ष पूर्व श्रीमती जिज्ञासु महर्षि का जन्म गृह व माण्डवी देखने आईं। मैंने चलते समय उन्हें कहा, टंकारा ट्रस्ट को कुछ दान अवश्य देकर आना तथा श्री दयालमुनि जी के घर जाकर उनको मिलकर आना.........।'' मुझे महात्मा आनन्द स्वामी जी की टंकारा यात्रा की याद आ गई। महात्मा जी महर्षि जी के जन्म गृह को देखने गये तो पं. रघुवीर सिंह शास्त्री जी उनके साथ थे। जन्म-गृह के ऐतिहासिक कमरे में अपनी भावपूर्ण शैली में अपनी ऊँची आवाज में महात्मा जी ने कहा, ''हे टंकारा की धरती एक और दयानन्द को जन्म देकर हमारा उद्धार कर दे। बेड़ा पार कर दे।'' इतना कहकर उनके नयन सजल हो गये। गला रुंध गया। साथ खड़े पण्डित रघुवीर सिंह जी के नयनों से टप-टप अश्रुकण गिरने लगे।

उपरोक्त शब्द बोलते ही मेरी अश्रुधारा भी रोके न रुकी। महात्मा आनन्द स्वामी ने मुझे रुला दिया। जब पहली बार मैं जन्म-गृह देखने गया तब भी श्री महात्मा जी के उपरोक्त कथन को स्मरण करके मैं उस कमरे में जी भरकर रोया था। मैं अपने मनोभावों में बह गया।

जन्म गृह तो देखा ही। हम दयाल मुनि जी के दर्शनार्थ उनके घर पर भी गये। टंकारा ट्रस्ट के कार्यक्रम में केरल से यात्रा में भाग लेने आये श्रीयुत् अरुण प्रभाकर जी के स्वागत के साथ श्रीमान् राजेश जी द्वारा अनूदित महर्षि की एक पुस्तक के मलयालम संस्करण का श्री दयाल मुनि जी से विमोचन करवाया। टंकारा गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी, श्री रमेश मेहता जी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। श्री धर्मवीर जी, ओम्मुनि जी तथा इस सेवक ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री नौबतरामजी, पं. लेखराज जी और भूपेन्द्र जी के मधुर भजन सुनकर सब आनन्दित हुए।

टंकारा से यात्रा गांधीधाम के लिए चल पड़ी। देर रात वहाँ पहुँचे। वहाँ के भव्य भवन व कई संस्थायें श्री वाचोनिधि जी ने दिखाई। जब गंगा-पार गुरुकुल कांगड़ी था तब महात्मा मुंशीराम की घास-फूस की झोंपड़ी राजनेताओं व साम्राज्यवादियों के बड़े-बड़े सत्ताधारियों के लिए आकर्षण का केन्द्र था। जब भव्य भवन बन गये तो सत्ता वालों को विनती करके बुलाना पड़ता है। गुजरात में भव्य भवन तो बहुत देखने को मिले परन्तु गुजरात में लोग ऋषि के नाम को अब भी नहीं जानते। ऋषि गुजरात में जन्मे थे, यह जानकारी ग्राम-ग्राम देनी होगी। इसके लिए दर्दीला दिल

व मिशनरी भाव रखने वाले समाजी चाहिएँ।

जिस ऋषि को इतिहासकारों ने, विदेशी लेखकों व पत्रकारों ने युग का सबसे बड़ा एकेश्वरवादी और पाषाण-पूजा का सबसे बड़ा विरोधी जाना व माना आज उसकी धरती गुजरात मूर्तिपूजा व बहुदेववाद की सन्देशवाहक बन रही है। यह चिन्ता का विषय है। इस चुनौती को स्वीकार करके आर्यों को आगे बढ़ना होगा।

मुन्दरा, भुज, लुडवा और नखत्राणा की यात्रा बहुत आनन्ददायक रही। यहाँ के कार्यक्रम तथा मेल मिलाप सबकी अपनी ही विशेषतायें थीं। लुडवा भुज आदि गुजरात के आर्यसमाज सुधारक, गो भक्त, यज्ञ प्रसारक-प्रचारक शिवगुण बापू तथा धर्मवीर खेतसी भाई की कर्मभूमि रही है। इन्होंने इसे तप से सींचा। एक इतिहास बनाया हमने देखा नखत्राणा में एक ही परिवार के सगे सात भाई समाज के कर्णधार हैं। सब दैनिक यज्ञ करते हैं तथा सब के घरों में गऊ का पालन होता है। अतिथि सेवा जो इस क्षेत्र में देखी वह अनुकरणीय है। मुन्दड़ा में हमें ऋषि-उद्यान के गुरुकुल का ब्रह्मचारी कश्यप अपने घर पर ले कर गया। परिवार सम्पन्न है। वेद-भक्त और ऋषि-भक्त है। इस परिवार के तीन युवा पुत्र ऋषि-उद्यान में आर्ष-ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। कश्यप के माता-पिता को नमन करके हम सबने स्वयं को धन्य-धन्य माना। यहाँ पर एक परिवार ने अतिथि-सत्कार का चमत्कार कर दिखाया।

इन समाजों के सुपठित, सम्पन्न कर्णधार यदि सप्ताह में एक दिन धर्म प्रचार के लिये दें तो आर्य समाज जन-आन्दोलन बन सकता है। धर्म-प्रचार करना अब प्रचारकों पर छोड़ दिया गया है। आर्यसमाजी धर्म-प्रचार करना भूल गये। महात्मा मुंशीराम, महात्मा नारायण स्वामी, पं. गंगा प्रसाद द्वय, ला. मुरलीधर और पं. श्यामभाई सब मिशनरी थे।

भाभर छोटा सा स्थान है। यहाँ श्री धनजी भाई समाज के प्रधान हैं। आचार्य ओ३म् प्रकाश जी गुरुकुल आबू पर्वत इसी ग्राम के हैं। युवा आचार्य जी की लगन, उत्साह, कर्मण्यता व सद्व्यवहार देखकर हमें बड़ा गौरव हुआ। ऐसे निर्भीक, स्पष्टवादी, सत्यवादी आर्यों पर हम जितना भी अभिमान करें थोड़ा है। आपके पिता श्री यहाँ के समाज के एक माननीय कर्णधार हैं।

श्री आचार्य जी भाभर से बहुत पहले हमें मार्ग में भटकने से बचाने के लिए पहुँच गये। उनके पहले पहुँचने से हम परेशानी से बच गये। अन्यत्र भी यदि कोई दिलजला ऐसे ही करता तो संयम व शक्ति का अपव्यय न होता। इस बीस दिन की प्रचार-यात्रा में श्रीमान् कमलेश जी शास्त्री तथा आचार्य ओमप्रकाश जी का सर्वाधिक व ठोस सहयोग रहा।

भाभर की गोशालायें :- गोशालायें तो इस यात्रा में कई देखीं परन्तु, गो-सेवा व गो-रक्षा में भाभर की गोशाला तो देशभर में अद्वितीय कही जा सकती हैं। यहाँ की गोशाला की तीन श्रेणियाँ । दूर-दूर से रुग्ण, घायल व अंधी गउओं को यहाँ लाया जाता है। इनकी संख्या आठ सहस्र से ऊपर है। कई डॉक्टर, गो-सेवक, गो-पालक दिन-रात इनकी रक्षा व उपचार में लगे रहते हैं। असाध्य रोगों से पीड़ित, घायल गउयें जब कुछ ठीक होती हैं तो उनको दूसरी गोशाला में रखा जाता है। जब पूरी रोग मुक्त हो जाती हैं तो तीसरी गोशाला में ले जाया जाता है।

ग्राम के २५-३० युवक नित्यप्रति प्रातःकाल स्वयं स्फूर्ति से इन गउओं की सेवा करने आ जाते हैं। सब निष्काम सेवा करते हैं। जब कोई यात्री बाहर से आते हैं तब भी ये युवक सहयोग व सेवा करने अपने आप आ जाते हैं। यह दृश्य देखकर हमें अपार प्रसन्नता हुई। आज के अर्थ-प्रधान युग में ऐसे युवक कहाँ मिलेंगे? न धन का लोभ और न फोटो खिंचवाने की लालसा।

गुजरात में हमने कई गोशालायें देखीं। भारतीय वंश की गऊओं की रक्षा व संवर्द्धन की गो-सेवकों में सर्वत्र चिन्ता देख कर बहुत हर्ष हुआ। एक गोशाला में गो-पालन व गो-हत्या निषेध विषयक कई विद्वानों व नेताओं की सूक्तियाँ पढ़ीं । इनमें पं. नेहरु का भी एक वचन था। यह कितने दुर्भाग्य व दु:ख का विषय है कि गो-शाला व गो-रक्षा आन्दोलन के जन्मदाता महर्षि दयानन्द की गो-करुणानिधि आदि पुस्तकों में से ऋषि का एक वचन वहाँ पढ़ने को न मिला। क्या यह गुजरात के लिए लज्जाजनक नहीं है। ऐसे लगा कि गुजरात में सुनियोजित नीति से राजनेताओं ने ऋषि से दूरी बना रखी है।

गुजरात की विशाल सड़कों व स्वच्छता को देखकर (अपवाद तो सर्वत्र होता ही है) हमें बड़ा आनन्द हुआ

परन्तु भाभर में भाजपा कार्यालय में एक सभा में मैंने सरदार पटेल जी विषयक कई प्रश्न पूछे तो सुपठित श्रोताओं में से कोई भी मेरे द्वारा पूछे गये किसी भी प्रश्न का उत्तर न दे सका यथा -

१. सरदार पटेल के अन्तिम भाषण का विषय क्या था?

२. सरदार पटेल ने अन्तिम भाषण कहाँ दिया?

३. अन्तिम भाषण किस दिन, कब दिया गया?

४. हैदराबाद का पुलिस ऐक्शन किस दिन आरम्भ हुआ?

५. मन्त्री परिषद ने किस दिन पुलिस ऐक्शन का निर्णय लिया था?

सरदार पटेल की जन्म भूमि के लोग सरदार पटेल के भक्त व नामलेवा हैं, यह गौरव की बात है परन्तु ऐसे प्रश्नो का उत्तर न दे पाना तो अशोभनीय है।

पोरबन्दर में माता कस्तूरबा विषयक एक प्रश्न मुझसे पूछा गया। मैं प्रश्न सुनकर चौंक गया। उस युवक को उत्तर तो दिया परन्तु दुःख तो हुआ कि हमारे युवक............इस यात्रा से बहुत अनुभव प्राप्त हुआ। यात्रायें तो उपयोगी हैं परन्तु यात्रा में आठ-दस व्यक्ति से अधिक नहीं होने चाहिये। यात्रा में कुछ लगनशील तथा सूझबूझ वाले युवक अवश्य होने चाहियें ताकि उनको शोध व प्रचार का प्रशिक्षण प्राप्त हो। यात्रियों को यह आशा लेकर नहीं निकलना चाहिये कि हमारे आवास-निवास व भोजन की सर्वत्र व्यवस्था होगी ही। यात्रा में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने के लिए एक स्थानीय मार्गदर्शक होना ही चाहिये। इससे व्यर्थ की परेशानियों से बचा जा सकता है।

यात्रा दस-बारह दिन से अधिक की न हो । यात्रा का उद्देश्य अखबारी न हो, वेद-प्रचार-ऋषि सन्देश हो। भ्रूण हत्या व बेटी बचाओ यात्राओं से समाचार तो बन जाता है। इसकी news value (समाचार महत्त्व) तो है किन्तु वैचारिक महत्त्व (views value) तो कुछ भी नहीं। वेद-प्रवचन करते हुए अन्य-अन्य कुरीतियों व बुराइयों के साथ भ्रूण हत्या के दोष व दुष्परिणाम भी जनता को हृदयङ्गम करवाये जा सकते हैं।

यात्रा में बड़े-बड़े ग्रन्थ भी हों परन्तु कुछ ऐसी पुस्तकें व ट्रैक्ट अधिक हों जो हमारे मूलभूत सिद्धान्तों की ठोस जानकारी दें । हमारी इस यात्रा में आर्य हुतात्माओं पर एक भी पुस्तक हमारे पास नहीं थी। मांसाहार, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, ईश्वर की सत्ता व स्वरूप, पुनर्जन्म, नरक क्या? स्वर्ग क्या, पञ्च-महायज्ञ, अग्निहोत्र, पाप, पुण्य, तीर्थ क्या? कर्मफल सिद्धान्त, अंधविश्वास, क्या पाप क्षमा हो सकते हैं? इत्यादि विषयों पर अच्छी-अच्छी लघु पुस्तिकायें हम लेकर जाते तो अधिक लाभ होता तथापि वैदिक पुस्तकालय के पर्याप्त साहित्य की बिक्री हुई। जो बड़े-बड़े ग्रन्थ सम्पन्न समाजों ने लिए- वे कोई विरला विद्वान् ही पढ़ेगा। मध्यम आकार की पुस्तकें व लघु पुस्तिकायें सब पढ़ते हैं।

जैनियों के जिस विशाल आधुनिकतम पुस्तकालय को हमने देखा उसमें आर्य विद्वानों का सहित्य तो है परन्तु बहुत थोड़ा। आचार्य उदयवीर जी की बहुत सी पुस्तकें उसमें देखकर हम हर्षित हुए। कोई दानी सभा को सहयोग करें तो आर्य विद्वानों की दो तीन सौ उत्तम कृतियाँ वहाँ पहुँचाई जा सकती हैं। पूज्य उपाध्याय जी का सहित्य वहाँ नाम-नाम को ही है। पं. लेखराम जी, देवेन्द्र बाबू जी, हरविलास जी व पं. लक्ष्मण जी लिखित ऋषि-जीवन, ऋषि का पत्र-व्यवहार, पं. इन्द्र जी का कोई उत्तम ग्रन्थ वहाँ नहीं था। स्वामी दर्शनानन्द जी का कुछ साहित्य था परन्तु, उपनिषद् प्रकाश नहीं था। गुजराती में ऋषि का वेद-भाष्य वहाँ पहुँचना चाहिये। अहमदाबाद का समाज यह कार्य जितना शीघ्र हो सके कर दे तो यश पायेगा।

स्वामी नारायण मत के गुरुकुल में सामवेद पर जो सम्मेलन हुआ उसमें डॉ. धर्मवीर जी के विद्वत्तापूर्ण भाषण की वहाँ के प्रमुख स्वामी जी ने भी बहुत प्रशंसा की। परोपकारिणी सभा को ऐसे प्रत्येक सम्मेलन में डॉ. वेदपाल जी आदि किसी विद्वान् को भेजना चाहिये अन्यथा हम सायणवादियों व मूर्तिपूजकों से पिछड़ जायेंगे। हमने यात्रा में यह अनुभव किया कि हिन्दू समाज के तथाकथित नेता हिन्दुओं की कुरीतियों व सामाजिक रोगों के बारे में एक भी शब्द कहने को तैयार नहीं। ये लोग तुलसी के पौधे भेंट करके उनको आरोपित करके हिन्दू धर्म को बचाना फैलाना चाहते हैं। विधर्मियों के प्रचार को ये लोग क्या रोक सकेंगे? जातिवाद का अजगर देश को निगलने पर तुला बैठा है।

वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५११६

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ अगस्त २०१५ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्री देवेन्द्र दहिया, सोनीपत, हरियाणा ३. श्री किशोर काबरा, अजमेर ४. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ५. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ६. श्री नायब सूबेदार शेर सिंह, भिवानी, हरियाणा ७. श्री श्याम सुन्दर राठी व श्रीमती कान्ता राठी, दिल्ली ८. श्रीमती अंजलि बंसल, नई दिल्ली ९. डॉ. दिनेश शर्मा व श्रीमती पुष्पलता शर्मा, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ अगस्त २०१५ तक)

१. श्रीमती उर्मीला उपाध्याय, अजमेर २. डॉ. राजेन्द्र प्रकाश माथुर, जोधपुर, राज. ३. श्री सत्यनारायण व श्रीमती विजयलक्ष्मी, अजमेर ४. श्री एस.एस.गोयल, लुधियाना, पंजाब ५. श्रीमती शकुन्तला पंचारिया, अजमेर ६. श्रीमती मधु शर्मा, अजमेर ७. श्री प्रहलाद भूतड़ा व श्रीमती रमन देवी, कोल्हापुर, महाराष्ट्र ८. श्रीमती कला व श्री दमोदर बाहेती, कोल्हापुर, महाराष्ट्र ९. श्री बाबूलाल गहलोत, जोधपुर, राज. १०. महेश्वरी समाज संस्था, अजमेर ११. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १२. श्रीमती मंजू शर्मा, अजमेर १३. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. १४. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. १५. श्री भोलाराम मौर्य, राजगढ़ १६. श्री सी.एल. भण्डारी, थाने, मुम्बई, महाराष्ट्र १७. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर १८. श्री राजेश कुमार, नई दिल्ली १९. गो-सेवा ट्रस्ट, बडौदा २०. श्री देवनन्दन प्रसाद, खगरिया, बिहार २१. श्री अरुण गुप्ता, नई दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

विवाह करके स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि जिस-जिस काम से विद्या, अच्छी शिक्षा, बुद्धि, धन, सुहृद्भाव और परोपकार बढ़े उस कर्म का सेवन अवश्य किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जिसके माता और पिता विद्वान् न हों, उनके सन्तान भी उत्तम नहीं हो सकते।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.९

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४

सभाध्यक्ष को चाहिये कि सूर्य्य और चन्द्रमा के समान श्रेष्ठ गुणों को प्रकाशित और दुष्ट व्यवहारों को शान्त कर के श्रेष्ठ व्यवहार से सज्जन पुरुषों को आह्लाद देवे। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.१६**

कैसा स्वतंत्रता दिवस?

- धर्मवीर आर्य,

पराधीनता एक ऐसा अभिशाप है, जिसमें मनुष्य अपनी उन्नति बिल्कुल भी नहीं कर सकता क्योंकि पराधीनता में मनुष्य के कार्य भी पराधीन होते हैं। मनुष्य के स्वतन्त्र होने पर वह अपनी उन्नति के तरीके स्वयं चुनता है, और शीघ्रातिशीघ्र अपनी यथेच्छ उन्नति कर लेता है। उसी प्रकार स्वतन्त्र राष्ट्र भी अपनी उन्नति हेतु अपनी कार्यप्रणाली का चयन स्वयं करता है, तथा शीघ्रता से उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। भारत देश को स्वतन्त्र हुए ६८ वाँ वर्ष चल रहा है। फिर भी यह देश अन्यान्यदेशों से उन्नति के पथ पर इतना पीछे क्यों है? यह जानने के लिए हमें यह जानना आवश्यक होगा कि स्वतन्त्र राष्ट्र किसे कहते हैं?

जिस देश की अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपनी परम्पराएँ, अपनी भाषा तथा अपना इतिहास, और अपना एक संविधान हो उस राष्ट्र को स्वतन्त्र राष्ट्र कहते हैं।

क्या भारत ने १५ अगस्त १९४७ के बाद अपनी संस्कृति तथा सभ्यता का पालन किया है?

क्या भारत ने १५ अगस्त १९४७ के बाद अपनी भाषा हिन्दी को सर्वाधिकार प्रदान किये?

क्या भारत ने १५ अगस्त १९४७ के बाद अपना स्वतन्त्र पूर्ण संविधान बनाया?

आप स्वयं विचार कर सकते हैं कि १८५७ की क्रान्ति के बाद अंग्रजों के पैर भारत में डगमगा रहे थे। क्योंकि उस समय सारा भारतीय जन-समूह अंग्रेजी सत्ता को मूल से उखाड़ फेंकना चाहता था। **अतः भारतीय जनता के विद्रोह की ज्वाला को शान्त करने केलिए २८ दिसम्बर १८८५ में ए.ओ.ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की।** वस्तुतः ए.ओ.ह्यूम का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पीछे वास्तविक उद्देश्य क्या थे? यह उनके द्वारा अपने मित्र को लिखे पत्र से स्पष्ट हो जाता है। उन्होंने लिखा, '**यह योजना (कांग्रेस की स्थापना) मैंने ही अपने कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न की है, जो एक और प्रयत्न बढ़ती हुई शक्ति के निष्कासन के लिए एक रक्षानली के रूप में बनाई गई है, जो राजनीतिक भय को निकालने के लिए सेफ्टी वाल्व अभयदीप का कार्य करे।**' अर्थात् कांग्रेस की स्थापना के पीछे ह्यूम का वास्तविक उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करना था। ह्यूम के जीवनी लेखक वैडरबर्न ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि, ''**भारत में असन्तोष की बढ़ती हुई शक्तियों से बचने के लिए एक 'अभय दीप' की आवश्यकता है और कांग्रेस से बढ़कर अभयदीप दूसरी कोई चीज नहीं हो सकती।**''

लाला लाजपत राय ने '**यंग इण्डिया**' में लिखा है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य यह था कि हम ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करें और उसको छिन्न-भिन्न होने से बचायें।

मूलतः सोचा जाये तो निष्कर्ष यह निकलता है कि कांग्रेस की स्थापना भारतीयों के लिए नहीं, अपितु ब्रिटिश सरकार के लिए ही की गई थी। और उसी कांग्रेस ने तथाकथित आजादी के बाद भी लगभग ६० साल तक भारत पर शासन किया है। मेरे कहने का सीधा-सा अभिप्राय यह है कि '**भारत १५ अगस्त १९४७ तक प्रत्यक्ष रूप से गुलाम था, और १५ अगस्त १९४७ के बाद अप्रत्यक्ष रूप से गुलाम ही था।**'

एक अमरीकी पत्रकार श्री हैनरी सेंडर भारत में भ्रमण के लिए आये। भारत में भ्रमण करते हुए भारतीयों की स्थिति को देखकर जो प्रतिक्रिया उन पर हुई, वह अमरीका में जाकर वहाँ के प्रसिद्ध पत्र '**प्रौग्रैसिव**' में उन्होंने लिखी। उनके लेख का अपेक्षित भाग इस प्रकार है- ''अंग्रेजों के चले जाने के बाद भारत में ३० वर्षों में झण्डे के सिवाय और कोई परिवर्तन नहीं आया है''। आप स्वयं भी इस बात को निम्न बिन्दुओं से जान सकते हैं-

१. आजादी के बाद भी, यदि महान् क्रान्तिकारी देशभक्त सुभाष जी मिलते तो उन्हें ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया जाता।

२. आजादी के बाद बिना निर्वाचित हुए ही नेहरु जी को प्रधानमंत्री क्यों बनाया गया? यह उन कुटिल अंग्रेजों

की एक चाल थी।

३. १९४७ के बाद लगभग ६० साल तक भारत पर कांग्रेस की सत्ता रही है। जिसका स्थापन-कर्त्ता एक इंग्लैण्ड निवासी ही था, सोचिए क्या कोई शत्रु भी, हमारे हित के लिए पार्टी की स्थापना करेगा? बिल्कुल नहीं।

४. १९४७ के बाद भारत में अंग्रेजी भाषा को जितना बढ़ावा मिला है तथा अंग्रेजी भाषा का प्रचार हुआ, उतना तो अंग्रेज भारत में २०० साल रहकर भी नहीं कर पाये।

५. १९४७ के बाद आजादी की ज्वाला में बलिदान कर देने वाले पवित्र देशभक्तों को सम्मान देने के बजाय उपेक्षित और अपमानित ही किया जाता रहा है। क्या उनके माता-पिता को कोई पूछता भी है?

६. भारत का संविधान मूल रूप से आज भी अंग्रेजी भाषा में ही है।

७. भारत के सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी भाषा में कोई भी अपनी राय नहीं दे सकता है।

८. यदि कोई पाकिस्तान का व्यक्ति कश्मीर की युवती से शादी कर लेता है तो उसे भारत की नागरिकता स्वयं प्राप्त हो जाती है।

९. कोई अन्य राज्य का प्रवासी कश्मीर में जाकर नहीं बस सकता है। क्या इसी तरह हम स्वतन्त्र हैं?

१०. जितनी गोहत्या के कत्लखाने आजादी से पहले थे, उनसे चौगुने गो-हत्या के कत्लखाने आज हैं।

११. आज आपको अपनी मां, बेटी, बहन को घर पर अकेला छोड़ने में भी दस बार सोचना पड़ता है, और अन्त में कहना पड़ता है कि दरवाजे बन्द रखना।

१२. कश्मीर भारत का होता हुआ भी वहाँ पर हम भारत का झंडा तिरंगा नहीं फहरा सकते हैं।

आखिर क्यों है ऐसा? क्या हम १९४७ के दिन पूर्ण स्वतन्त्र नहीं हुए थे। आप स्वयं सोचिए कि आजादी के बाद १९४७ में बिना निर्वाचित हुए ही नेहरु को प्रधानमन्त्री पद सौंपा गया था। क्योंकि नेहरु और अंग्रेजों की मिली-भगत अवश्य रही होगी, इसीलिए तो नेहरु ने स्वयं उस महान् देशभक्त क्रांतिकारी नेताजी सुभाष चन्द्रबोस को प्रधानमन्त्री पद के बदले में ब्रिटिश सरकार को सौंपने की शर्त मानी थी। परन्तु यह बात जन-समूह में थोड़े परिवर्तन के साथ आयी कि अंग्रेजों ने आजादी देने के बदले में नेताजी को मिलने के बाद इंग्लैण्ड को सौंपने का आदेश दिया है।

कोई कहे या न कहे मैं तो यही कहूँगा कि भारत का वास्तविक स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त १९४७ होने के बजाय १८ मई २०१४ के दिन होना चाहिए। इसी बात को लंदन के एक प्रसिद्ध समाचार पत्र में इन शब्दों में लिखा गया है-

Today, 18 May, will go down in history as the day when Britain finally left India. Narendra Modi's victory in the elections marks the end of a long era in which the structures of power did not differ greatly from those through which Britain ruled the sub continent. India under the congress party was in many ways a continuation of the British Raj by other means.

-The Gaurdian, Editorial, Sunday 18 May 2014 London

पाठकों की सुविधा हेतु, उपरोक्त अंग्रेजी गद्यांश का हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है-

आज १८ मई २०१४ को इतिहास में वो दिन समझा जा सकता है, जब अंग्रेजों ने अन्ततः भारत छोड़ दिया। निर्वाचनों में नरेन्द्र मोदी की विजय एक लम्बे युग के अन्त का लक्षण है, एक ऐसा युग, जिसमें सत्ता का ढाँचा ब्रिटिश लोगों के सत्ता के उस ढांचे से बहुत अलग नहीं था, जिससे वे भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन करते थे। **कांग्रेस दल द्वारा प्रशासित भारत अनेक अर्थों में प्रकार-भेद से ब्रिटिश राज से पृथक् नहीं था।**

-The Gaurdian, Editorial, Sunday 18 May 2014 London

- अकलौनी, भिण्ड, मध्यप्रदेश

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

जिज्ञासा समाधान - ९४

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा:- निम्न लिखित वेद मन्त्रों से शंका और उपशंका उत्पन्न होता है। यजुर्वेद अ. २९ के मन्त्रों ४०,४१ और ४२ संख्या वाले.... "**छागमश्विभ्योस्वाहा। मेषं सरस्वत्ये स्वाहा, ऋषभमिन्द्राय....। ४०**" "**छागस्य वषाया मेदसो.....मेषस्य वषाया मेदसो, ऋषभस्य वषाया मेदसो......४१**" **छागैर्न मेषै, मृषमैःसुता.....४२**

इनमें से ४१ और ४२ मन्त्रों का अर्थ "दयानन्द संस्थान से प्रकाशित भाष्य में भी बकरे, भेड़ों और बैल किया गया है। ये सब पौराणिक के जैसा भाष्य देखने को आया शंका होता है इस शंका के समाधान कर के उत्तर भेजें।"

पं. गम्भीर राई अग्निहोत्री, कोलाखाम, पोस्ट लावा बाजार- ७३४३१९, कालिम्पोङ

समाधान- महर्षि दयानन्द आर्यावर्त की उन्नति, सुख, समृद्धि का एक कारण यज्ञ को कहतेहैं। महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं- "आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये।" महर्षि ने यहाँ यज्ञ की महत्ता को प्रकट किया है। यज्ञ से रोग कैसे दूर होंगे? जब हवन की अग्नि में रोगनाशक पदार्थ डालेंगे तब रोग दूर होगें। यज्ञ में माँस आदि पदार्थ डालने से रोग दूर होकर कैसे कभी सुख की वृद्धि हो सकती है? उलटे मांसादि द्रव्य अग्नि में होम करने से तो रोग उत्पन्न हो दु:ख की वृद्धि होगी। महर्षि होम से रोग दूर होना और सुख का बढ़ना देख रहे हैं। यज्ञ में मांसादि का डालना कब और क्यों हुआ वह अन्य पाठकों को दृष्टि में रखकर आगे लिखेगें। पहले आपकी जिज्ञासा का समाधान करते हैं। आपने जो यजुर्वेद २१ वें अध्याय के ४०-४२ मन्त्र उद्‌धृत किये हैं वह जो उन मन्त्रों का महर्षि ने भाष्य किया है सो ठीक है। इस भाष्य को देखने पर पौराणिकों जैसा भाष्य न लगकर अपितु और दृढ़ता से आर्ष भाष्य दिखता है। यहाँ पाठकों को दृष्टि में रखकर मन्त्र व उसका ऋषि भाष्य लिखते हैं।

(१) होता यक्षदग्निँ स्वाहाज्यस्य स्तोकानाथंस्वाहा मेदसां पृथक् स्वाहा
छागमश्विभ्याम् स्वाहा मेषं सरस्वत्यै स्वाहाऽऋषभमिन्द्राय .....पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज।। १९.४०

मन्त्रों को पूरा पदार्थ न लिखकर, जिन पर आपकी जिज्ञासा है उनका अर्थ व मन्त्रों का भावार्थ यहाँ लिखते हैं- (छागम्) दु:ख छेदन करने को (अश्विभ्याम्) राज्य के स्वामी और पशु के पालन करने वालो से (स्वाहा) उत्तम रीति से (मेषम्)सेचन करने हारे को (सरस्वत्यै) विज्ञानयुक्त वाणी के लिए (ऋषभम्) श्रेष्ठ पुरुषार्थ को (इन्द्राय) परमैश्वर्य के लिए।

भावार्थ- इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्या, क्रियाकुशलता और प्रयत्न से अग्न्यादि विद्या को जान के गौ आदि पशुओं का अच्छे प्रकार पालन करके सबके उपकार को करते हैं वे वैद्य के समान प्रजा के दु:ख के नाशक होते हैं।

(२) होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषेताम्... ....मेषस्य वपाया मेदसो जुषताम् हविर्होतर्यज........ ....ऋषभस्य वपाया मेदसो जुषताम्....... १९.४१

(छागस्य) बकरा, गौ, भैंस आदि पशु सम्बन्धी (वपाया) बीज बोने वा सूत के कपड़े आदि बनाने और (मेदसः) चिकने पदार्थ के (हविः) लेने देने योग्य व्यवहार का (जुषेताम्) सेवन करें............(मेषस्य) मेढ़ा के (वपायाः) बीज को बढ़ाने वाली क्रिया और (मेदसः) चिकने पदार्थ सम्बन्धी (हविः) अग्नि में छोड़ने योग्य संस्कार किये हुए अन्न आदि पदार्थ (जुषताम्) सेवन करें...........(ऋषभस्य) बैल की (वपायाः) बढ़ाने वाली रीति और (मेदसः) चिकने पदार्थ सम्बन्धी (हविः) देने योग्य पदार्थ का (जुषताम्) सेवन करें।

भावार्थ- जो मनुष्य पशुओं की संख्या और बल को बढ़ाते हैं वे आप भी बलवान् होते और जो पशुओं से उत्पन्न हुए दूध और उससे उत्पन्न हुए घी का सेवन करते वे कोमल स्वभाव वाले होते हैं और जो खेती करने आदि

के लिए इन बैलों को युक्त करते हैं वे धनधान्य युक्त होते हैं।

(३)होता यक्षदश्विनौ सरस्वतीमिन्द्रम...छागैर्नमेषैर्ऋषभैः सुता ....मधु पिवन्तु मदन्तु व्यन्तु होतर्यज।। १९.४२

पदार्थ- (छागैः) विनाश करने योग्य पदार्थों वा बकरा आदि पशुओं (न) जैसे तथा (मेषैः) देखने योग्य पदार्थों वा मेढ़ों (ऋषभैः) श्रेष्ठ पदार्थों वा बैलों (सुताः) जो अभिषेक को पाये हुए हों वे।

भावार्थ- जो संसार के पदार्थों की विद्या, सत्यवाणी और भली भांति रक्षा करने हारे राजा को पाकर पशुओं के दूध आदि पदार्थों से पुष्ट होते हैं वे अच्छे रसयुक्त अच्छे संस्कार किये हुए अन्न आदि जो सुपरीक्षित हों, उनको युक्ति के साथ खा और रसों को पी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के निमित्त अच्छा यत्न करते हैं, वे सदैव सुखी होते हैं।

यहाँ इन मन्त्रों के भाष्य और भावार्थ में कहीं भी पौराणिकता नहीं लग रही है। मन्त्रों में छाग, ऋषभ, मेष आदि शब्द आये हैं, उनका महर्षि ने जो युक्त अर्थ था वह किया है। छाग का अर्थ लौकिक भाषा में बकरा होता है किन्तु महर्षि ने छाग का अर्थ दुःख छेदन किया है। मेष का अर्थ सामान्य भेड़ होता है, और महर्षि का अर्थ सेचन करने हारा है। ऐसे ही ऋषभ का सामान्य अर्थ बैल और महर्षि का अर्थ श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। जब ऐसे पौराणिकता से परे होकर महर्षि ने वैदिक अर्थ किये हैं तब कैसे कोई कह सकता है कि यह पौराणिकों जैसा भाष्य दिखता है। भेड़ बैल, बकरा आदि शब्द आने मात्र से पौराणिकों जैसा भाष्य नहीं हो जाता।

हाँ यदि महर्षि मन्त्र में आये हुए वपा और मेद का अर्थ चर्बी करके उसकी हवन में आहूति की बात कहते तो यह महर्षि का भाष्य अवश्य पौराणिकों वाला हो जाता किन्तु महर्षि ने ऐसा कहीं भी नहीं लिखा। अपितु वपा का अर्थ महर्षि बीज बढ़ाने वाली क्रिया करते हैं और मेद का अर्थ चिकना पदार्थ जो कि महर्षि ने मन्त्रों के भावार्थ में घी-दूध आदि पदार्थ लिखे हैं।

महर्षि का किया वेद भाष्य तो पौराणिकता से दूर वैदिक रीति का भाष्य है। जो पौराणिकों ने इन्हीं वेद मन्त्रों के अर्थ भेड़, बकरा, बैल आदि पशुओं के मांस को यज्ञ में डालना कर रखे थे, उनको महर्षि ने दूर कर शुद्ध भाष्य किया है। पौराणिक लोगों ने लोक प्रचलित अर्थ वेद के साथ जोड़कर भाष्य किया, जिससे इतना बड़ा अनर्थ हुआ कि संसार के जो सभी मनुष्य एक वेद मत को मानकर चल रहे थे, उसको छोड़ नये-नये मत बनाकर चलने लग गये। यह वही वेदमन्त्रों के अनर्थ करने का परिणाम था।

वपा और मेद का अर्थ चर्बी, वसा लोक में है जो कि यही अर्थ पौराणिकों ने लिया। पौराणिकों को ज्ञात नहीं की वेद में रूढ शब्द और अर्थों का प्रयोग नहीं है अपितु यौगिक शब्द और अर्थों का प्रयोग है जो कि महर्षि दयानन्द ने योगिक मानकर ही वेदमन्त्रों का अर्थ किया है।

यज्ञ में मांस आदि का डालना महाभारत युद्ध के पश्चात् ब्रह्मणों के आलस्य प्रमाद के कारण हुआ। महर्षि दयानन्द इस विषय में कहते हैं- ''परन्तु ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या संदेह?............।''

जब ब्राह्मण विद्याहीन हुये तब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के अविद्वान् होने में तो कथा ही क्या कहानी? जो परम्परा से वेदादिशास्त्रों का अर्थ सहित पढ़ने का प्रचार था, वह भी छूट गया। केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढ़ते रहे। सो पाठ मात्र भी क्षत्रियों आदि को न पढ़ाया। क्योंकि जब अविद्वान् हुए, गुरु बन गये, तब छल-कपट-अधर्म भी उनमें बढ़ता चला।.......'' स.प्र.स. ११।।

यज्ञ में मांसादि का कारण ब्राह्मणों का आलस्य प्रमाद व विषयासक्ति रहा है, यह मान्यता महर्षि दयानन्द की है जो युक्त है।

जब यज्ञों में अथवा यज्ञों के नाम पर पशु हिंसा का प्रचलन हुआ तो अश्वमेघ, गोमेध, नरमेध आदि यज्ञों का यथार्थ स्वरूप न रखकर उल्टा कर दिया अर्थात् अश्वमेघ यज्ञ जो चक्रवर्ती राजा करता था, इसमें इन पोप ब्राह्मणों ने घोड़े के मांस की आहुति का विधान यज्ञ कर दिया। ऐसे गोमेध जो कि गो का अर्थ इन्द्रियाँ अथवा पृथिवी था, जिसमें इन्द्रिय संयमन किया जाता था उस गोमेध यज्ञ में गाय के मांस का विधान इन तथाकथित ब्राह्मणों ने कर दिया। इसके विधान के लिए सूत्रग्रन्थों में ब्राह्मण ग्रन्थों

का प्रक्षेप कर दिया। यज्ञों के यथार्थ अर्थ, स्वरूप को समझकर जो पशु यज्ञ व यजमान् के उपकारक थे, उन पशुओं को मार-मारकर यज्ञकुण्डों में उनकी आहुति देने लगे। धीरे-धीरे अनाचार इतना बढ़ा कि वैदिक मन्त्रों का विनियोग यज्ञों में और उनके माध्यम से पशुहिंसा में होने लगा। जिस प्रकार के मन्त्र ऊपर दिये हैं ऐसे मन्त्रों का विनियोग ब्राह्मण वर्ग यज्ञ में पशुहिंसा के लिए करने लगे थे।

वेदों में यज्ञ के पर्याय अथवा विशेषण रूप में 'अध्वर' शब्द का प्रयोग सैकड़ों स्थानों पर आया है। निघण्टु में 'ध्वृ' धातु हिंसार्थक है। अध्वर शब्द में हिंसा का निषेध है अर्थात् नञ् पूवर्क ध्वृ धातु से अध्वर शब्द बना है। इस अध्वर शब्द का निर्वचन करते हुए महर्षि यास्क ने लिखा है- **अध्वर इति यज्ञनाम-ध्वरहिंसाकर्मा तत् प्रतिषेधः।** (निरुक्त-१.८)

अध्वर यज्ञ का नाम है, जिसका अर्थ हिंसा रहित है। अर्थात् जहाँ हिंसा नहीं होती वह अध्वर=यज्ञ कहलाता है। ऐसे हिंसा रहित कर्म को भी इन पोपों ने महाहिंसा कारक बना दिया था।

मेध शब्द 'मेधृ' धातु से बना है। **मेधृ- मेधाहिंसनयोः संगमे च** यह धातुपाठ का सूत्र है। मेधृ धातु के बुद्धि को बढ़ाना, लोगों में एकता या प्रेम को बढ़ाना और हिंसा ये तीन अर्थ हैं। इन तीनों अर्थों में से पोप जी को हिंसा अर्थ पसन्द आया और इससे यज्ञ को भी हिंसक बना दिया। जिस धर्म और समाज में अहिंसा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था वहाँ यज्ञों हिंसा करना एक विडम्बना ही थी।

वेदों में अनेकत्र ऐसे वचन उपलब्ध हैं जिसमें स्पष्ट ही पशु रक्षा का निर्देश है। यजुर्वेद के प्रारम्भ में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहते हुए कहा है - 'पशुन्पाहि' पशु मात्र की रक्षा करो। इसी यजुर्वेद के मन्त्र १.१ में गौ को 'अघ्न्या' न मारने योग्य कहा है। यजु. ६.११ में गृहस्थ को आदेश दिया है- 'पशुंस्त्रायेथाम्' पशुओं की रक्षा करो। १४.३ में कहा- 'द्विपादवचतुष्पात् पाहि' दो पैर वाले मनुष्य और चार पैर वाले पशुओं की रक्षा करो। वेद में ऐसे-ऐसे निर्देश अनेक स्थलों पर हैं। जो वेद पशुओं की रक्षा करने का निर्देश देता हो उसमें पशुओं की हिंसा का अर्थ निकालना भी पशुता ही है।

महर्षि दयानन्द वेदों के अनुयायी थे। वेदों को सर्वोपरि प्रमाण मानते थे। महर्षि की वेदों के प्रति दृढ़ आस्था थी। और महर्षि ने वेदों को यथार्थ में समझा था। यथार्थरूप में वेद को समझने वाले ऋषि के वेद भाष्य में पौराणिकता कैसे हो सकती है, ऐसा होना सर्वथा असम्भव है। अस्तु

-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

वेशों का ईद मुबारक

माननीय सम्पादक जी, परोपकारी, सप्रेम नमस्ते। वेशपंथियों ने सार्वदेशिक सभा के भवन के बाहर 'ईद मुबारक' के बैनर लगाकर यह प्रमाणित कर दिया है कि उनके मन में क्या है। इनके मन में कुछ भी हो सकता है परन्तु आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रति लेशमात्र भी कोई भावना नहीं।

जब नेपाल में साम्यवादी प्रधानमन्त्री सत्तासीन हुआ तो श्री अग्निवेश ने ब्र. नन्दकिशोर जी से कहा, ''लो नेपाल में मेरा राज हो गया।'' सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध अमृतसर में जो कुछ कहा, उस समय के दैनिक पत्रों में छपा मिलता है। समलैङ्गिकता का समर्थन, बिग बॉस में जाकर साधुवेश की शोभा बढ़ाने वाले ने अब याकूब की रक्षा के लिए झण्डा उठा लिया है।

जिन लोगों ने कभी अग्निवेश के अपमान पर रोष प्रकट करते हुए दिल्ली में कभी जलूस निकाला था, उन्हें अब अग्निवेश के नेतृत्व में बकर ईद (गौ-मांस वाली ईद) पर नारे लगाते हुए जलूस निकालना चाहिये।

पं. लेखराम, वीर राजपाल, वीर नाथूराम, हुतात्मा श्यामलाल और वीर धर्मप्रकाश वेदप्रकाश के बलिदान पर्व पर तो इन्होंने कभी बैनर लगाया नहीं। ये लोग ईद, रोजे व क्रिसमिस मनाने में हाजियों से भी आगे-आगे रहेंगे। इस पंथ का जन्म ही आर्य जाति के विनाश के प्रयोजन से हुआ- यह अब सर्वविदित है। इन्होंने तो कभी अपने दीक्षा-गुरु स्वामी ब्रह्ममुनि जी का भी कभी नाम नहीं लिया।

- राजेन्द्र जिज्ञासु, वेद सदन, अबोहर, पंजाब

संस्था - समाचार

०१ से १५ अगस्त २०१५

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान, आर्यजगत के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है प्रात:काल यज्ञोपतन्त वेद के कुछ मन्त्र का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, आर्योदेश्यरत्न माला आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय कराया जाता है।

महिला कहती है मेरा पुत्र शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ है। वह बाहरी और भीतरी शत्रुओं को समाप्त कर सकताहै। पुत्री विराट् अर्थात् प्रभुत्ववाली (घर और बाहर के लोगों को प्रभावित करने वाली) है। जैसे खम्बा के आधार पर मकान की छत स्थिर रहती है वैसे ही मैं घर की सब जिम्मेदारियों को ठीक से सम्भालने वाली हूँ। घर का कोई काम बिगड़ने नहीं देती मैं पति के कार्यव्यवहार में उनका सहयोग करती हूँ इसलिये मेरे पति यश और प्रशंसा प्राप्त करते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **ऋग्वेद के शची पौलोमी सूक्त की** चर्चा करते हुए **डॉ. धर्मवीर जी** ने बताया कि मन्त्र के माध्यम से मन्त्र का अर्थ करते हुए आगे कहते हैं कि श्रेष्ठ कर्मशील गुणसम्पन्ना कुलवधू की कोई विरोधी नही होती इसलिये वह कहती है कि मेरा जो पति है मैं अपने गुणों के कारण उसके हृदय में विराजमान हूँ। मै शत्रुनाशिनी होती हुई शत्रु रहिता हूँ जय प्राप्त करती हुई शत्रुओं को अभिभव करने वाली हूँ। मैंने अपने शत्रुओं को जीत लिया क्योंकि मुझमें जीतने का सामर्थ्य है। जैसे वृक्ष अन्य अस्थिर लताओं को पनपने नहीं देती वैसे ही विरोधियों के तेज, धन, वैभव को नष्ट करती हूँ। सम्पत्ति और ऐश्वर्य को समाप्त कर देती हूँ। दूसरों के तेज को नष्ट करने वाली हूँ। मेरे अधिक तेज से दूसरों के तेज छिप जाते हैं। स्त्री का परिवार में कोई शत्रु इसलिये नहीं होता क्योंकि वह अपने गुणों के कारण सभी सदस्यों में प्रिय होती है। वह स्नेह, सौहार्द, सम्मान के कारण परिवार में मुख्य होती है। वह सरल, सहज, सबकी समस्याओं के समाधान करने में समर्थ, होती है इसलिये सब उसे चाहते हैं।

शत्रु दो प्रकार के होते हैं, एक आन्तरिक और दूसरा बाहरी । बाहर के शत्रु पर विजय तभी प्राप्त हो सकता है जब भीतर के शत्रु को जीत लिया जाये। अर्थात् दूसरे मनुष्यों को हम अपने नियन्त्रण में तब कर पाते हैं जब अपने मन, इन्द्रियों को वश में कर लें।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग- रविवारीय प्रवचन में **डॉ. धर्मवीर जी** ने बताया कि जीवन पूरा संघर्ष है, नैतिक, धार्मिक बनने केलिये पुरुषार्थ आवश्यक है। देवासुर संग्राम सदा से रहा है। शरीर, मन और आत्मा की आवश्यकता अलग-अलग है। शरीर बूढ़ा होकर नष्ट हो जाता है लेकिन मन की इच्छायें समाप्त नहीं होती हैं। मन के कारण से बन्धन और मुक्ति होती है। मन के प्रवाह को विवेक से बदला जा सकता है।

सायंकालीन प्रवचन क्रम में उपाचार्य सत्येन्द्र जी ने आर्योदेश्यरत्नमाला के व्याख्यान देते हुए बताया कि जो जितना स्तुति करेगा उसे उतना ही आनन्द प्राप्त होता है । इसी प्रकार सांसारिक व्यवहार में भी जिन पदार्थों के अच्छे गुणों को हम जान लेते हैं उससे स्वाभाविक प्रेम हो जाता है। चाहे वह जड़ पदार्थ हो या चेतन।

प्रार्थना का फल विषय पर उन्होंने कहा कि प्रार्थना करने से आत्मा में कोमलता, सरलता आती है। जिससे प्रार्थना की जाये उसके प्रति प्रेम होना चाहिये तभी हम उनके गुणों को ग्रहण कर सफल हो सकते हैं। इसलिये जिस पदार्थ की हमारे पास कमी होती है उसको हम दूसरों से मांगते है।

सायंकालीन सत्र में परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी ने कहा कि आर्य समाज ने अपने स्थापना के प्रारम्भिक काल में कई मुश्किलों का सामना करते हुए बहुत काम किया। आर्य समाज की शिक्षा का प्रभाव था कि उस समय आर्य समाज का सेवक भी संध्योपासना ठीक ढंग से कर लेता था। मनुष्य अपने कर्मों से ऊँचा या नीचा होता है। कोई मनुष्य जन्म से ब्राह्मण नहीं होता किन्तु विद्या पढ़कर हो सकता है। ऋषि दयानन्द और आर्य समाज ने छुआछुत को मिटाया। लाडनू आर्य समाज के सेवक हरिजन के घर पर मैंने भोजन किया। वहाँ दलितों के पिछड़ेपन का कारण शराब, माँसाहार था। हम सब को ऋषिमिशन का कार्य करना है उसके लिये सभी लोगों को संकल्प करना चाहिये। महर्षि दयानन्द ने अकेले ही दुनिया को झुका दिया, आज सब देशों में वेद और आर्य समाज

का प्रचार हो रहा है।

रविवारीय सायंकालीन सत्र में ब्रह्मचारी अशोक जी ने गुरु शिष्य सम्बन्धों पर अपने विचार रखे और कहा कि गुरु ऐसा व्यक्ति होना चाहिये जो सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं की उपेक्षा करने वाला न हो। उन्होंने आगे बताया कि चाणक्य जैसे गुरु न होते तो राष्ट्र रक्षा के लिये चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे राजा हमें नहीं मिल पाता। वे अत्यन्त प्रतिभाशाली, विद्वान् और महान देशभक्त गुरु थे।जब गुरु महान होता है तभी शिष्य भी अत्यन्त योग्य होते हैं जो संसार के कल्याण के लिये बड़े-बड़े कार्य करते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **स्वामी आशुतोष जी** ने कहा कि लोक व्यवहार में मनुष्य अपने मेधा बुद्धि से कार्यों को अच्छे प्रकार सम्पन्न करता है। ईश्वर प्रदत्त भौतिक साधनों में सर्वोत्तम साधन बुद्धि है। सर्वशास्त्रों का ज्ञान कराने वाली, सत्य असत्य का निर्णय कराने वाली, पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का बोध कराने वाली बुद्धि ही है। सत्व प्रधान बुद्धि देवत्व ऋषित्त्व को प्राप्त कराती है, राजसी बुद्धि लड़ाई झगड़ा, कामना, ऐशणा में फंसाती है, तामसिक बुद्धि विषय भोग में डुबो देती है। परमात्मा सत्य और दण्ड का पति है। सब जीवों का पालक, अत्यन्त कमनीय और प्रिय है।

मन गतिशील है यदि उसे ईश्वर में नहीं लगायेंगे तो वह सांसारिक भोगों में अपने आप लग जायेगा। मन को ईश्वर में लगाने के लिये वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि सद्‌ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। छान्दोग्य उपनिषद् में कहा गया है जो मनुष्य इसी जीवन में परमात्मा को जान लेता है। उसका जीवन सफल है।

(२) विशेष व्यक्तियों का आगमन- श्री निरंजन **साहू डॉ. धर्मवीर जी** मिलने आये। लुधियाना से **श्री गोयल जी** ऋषि उद्यान में आए पहले भी आते रहे हैं वे निष्ठावान आर्य हैं आर्य समाज के अन्य सँस्थाओं में भी जाते रहते हैं। शारदा परिवार के **श्री मनोज जी शारदा** जन्म दिवस मनाने के लिए अपनी पत्नी के साथ प्रात: यज्ञ वेला में ऋषि उद्यान आये और मुख्य यजमान बने। उन्होंने चाँदी के यज्ञपात्रों का दान किया । इस अवसर पर आचार्य डॉ. धर्मवीर जी ने उनके पूर्वजों द्वारा स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के लिये किये गये कार्यों का स्मरण उन्हें कराया। इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि श्री मनोज जी के परनाना श्री आत्माराम अमृतसरी जी ने आर्य समाज के लिये अनेक कार्य किये। श्री अमृतसरी जी ने पं. लेखराम द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द की अधूरी जीवनी को पूरा किया। स्वामी दयानन्द कृत 'संस्कार विधि' का भाष्य 'संस्कार चन्द्रिका' लिखा। बडौदा नरेश ने अपने राज्य में शिक्षा और समाज की व्यवस्था हेतु मार्गदर्शन के लिये उन्हे बुलाया था। दलित वर्ग के उत्थान के लिये महाराज बड़ौदा नरेश को उन्होंने सहयोग किया। साहित्यकार और नेता श्री हरविलास शारदा, श्री रामविलास शारदा को भी याद किया।

(३) विशेष कार्यक्रम- १५अगस्त को ऋषि उद्यान के सरस्वती भवन के परिसर में सभा के **कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी** की धर्म पत्नि **श्रीमती ज्योत्सना जी** द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वन्देमातरम् का गान किया। इस अवसर पर सभा के मन्त्री **श्री ओममुनि जी, आचार्य श्री सत्यजीत जी, स्वामी आशुतोष जी**, अन्य सन्यासी, वानप्रस्थी, आश्रमवासी तथा सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम

(क) जुलाई २०१५- १.परोपकारिणी सीाी के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष जी नवाल के घर पारिवारिक यज्ञ

२. **२४-२६ जुलाई** - आर्य समाज जागृति विहार, मेरठ के वार्षिकोत्सव में उद्‌बोधन प्रदान किए

(ख) २ अगस्त - डॉ. क्षेत्रपाल चिकित्सालय, अजमेर का उद्‌घाटन यज्ञ और सत्संग सेकिया।

(ग) १०-१६ अगस्त - चण्डीगढ़ सैक्टर -७ में वेदकथा द्वारा मार्गदर्शन किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) १८ अगस्त श्री तपेन्द्र जी के घर पारिवारिक यज्ञ और उद्‌बोधन प्रदान करेगें।

(ख) २१-२३ अगस्त - आर्यसमाज नजवगढ़, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान प्रदान करेगें।

(ग) २६-२८ अगस्त - राजगढ़ में आर्य समाज के कार्यक्रम में मार्ग दर्शन प्रदान करेंगे।

आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम-

कस्तूरबा विद्या मन्दिर, ग्राम जमानी इटारसी में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर उद्‌बोधन प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) २३-३० अगस्त- आर्य समाज, अहमदनगर, महाराष्ट्र में श्रावणी उपलक्ष्य पर यज्ञ. और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-१७

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समानेयोक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।

वेद में, परिवार में सुख से रहने और अन्य सदस्यों को सुखी रखने का उपाय बताया है, इस मन्त्र में बहुत सारी छोटी-छोटी प्रतिदिन उपयोग में आने वाली बातों की चर्चा है। मन्त्र के प्रथम भाग में परिवार के अन्दर खानपान कैसा हो, इसकी चर्चा है। भोजनपान में सभी सदस्यों में समानता का भाव रहना चाहिए। पक्षपात का प्रारम्भ घरों में भोजन और काम के विभाजन से होता है। मनुष्य का स्वभाव है वह कम से कम करना चाहता है और अधिक से अधिक पाना चाहता है। मनुष्य समूह में होता है तो उसकी इच्छा अधिक और अच्छा पाने की रहती है। सभी ऐसा चाहेंगे तो समाधान नहीं होगा, मन में चोरी का भाव आयेगा, छुपकर पाने की और छुपकर खाने की इच्छा होगी। इस प्रकार जो अकेला खाना चाहता है वह पाप करता है, इसी कारण वेद ने कहा है-

केवलाघो भवति केवलादी।

जो मनुष्य अपने आप अकेला खाता है, वह पाप ही खाता है। गीता में भी उपदेश दिया गया है-

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचनयम्त कारणात्।

जो लोग अपना ही पकाकर स्वयं अकेले ही खाना चाहते हैं, उनके लिए गीता में कहा गया है- ऐसे व्यक्ति पाप ही पकाते हैं और पाप ही खाते हैं।

वैदिक संस्कृति में भोजन के सम्बन्ध में बहुत सारे निर्देश मिलते हैं। एक गृहस्थ को भी भोजन अपने लिए नहीं, यज्ञ के लिये बनाने का विधान है। मनु महाराज कहते हैं- गृहस्थ को भोजन पाने की दो स्थितियाँ हैं। एक तो वह भुक्त शेष खा सकता है, दूसरा वह हुत शेष खा सकता है। दोनों ही परिस्थितियों में गृहस्थ का भोजन अपने लिये नहीं है। वह शेष भोजी है। शेष तो मुख्य के उपयोग करने के पश्चात् जो बचता है उसे शेष कहते हैं। ये दोनों बन्धन आजकल के व्यक्ति को बाधक लगते हैं, उसे अपने साथ बड़ा अन्याय लगता है। यथार्थ में विचार करने पर इसमें बड़ा रहस्य ज्ञात होता है। पहली बात मनुष्य अपने लिये पकाता है तो कुछ भी, कैसा भी बना कर खा लेता है, उसे बहुत चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होती। विशेष रूप से परिवार में जब महिला अकेली रह जाती है, अन्य सदस्य घर पर नहीं होते तो उसे भोजन बनाना व्यर्थ लगता है, वैसे ही कुछ भी बनाकर कुछ भी खाकर काम चलाने की भावना रहती है। पति और बच्चों के रहने पर भोजन यथावत् अच्छा बनाने का प्रयास रहता है। इसी प्रकार घर में अतिथि आ जाये तो भोजन कुछ विशेष बनता है, विशेष अतिथि के आने पर भोजन की विशेषता बढ़ जाती है। इसी प्रकार जब भगवान के लिए, मन्दिर के लिये यज्ञ के लिए कुछ बनेगा तो अच्छा बनेगा, विशेष बनेगा आपके घर में सदा विशेष और अच्छा भोजन ही बने इस कारण गृहस्थ के भोजन पर नियम बना दिया गृहस्थ को हुत शेष खाना चाहिये या भुक्त शेष।

मनुष्य के मन में खिलाने की भावना आ जाती है तो फिर उसके अन्दर से पक्षपात या चोरी का भाव निकल जाता है। मनुष्य जब अकेला खाता है तब छिपकर खाता है परन्तु जब खिलाने की इच्छा रखता है तो उसे सबके साथ खाने में आनन्द आता है। तब एक जैसा खाना होता है। भोजन को बांटकर खाता है। भोजन सबके साथ खाना और बांटकर खाना परस्पर प्रीति का कारण होता है परन्तु मुसलमानों की भांति जूठा एक ही पात्र में खाना स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होता। प्रेम का आधार पक्षपात रहित होना है, भोजन का एक स्थान पर होना नहीं है। भोजन सौहार्द और प्रीति का प्रतीक होता है, श्रीकृष्ण जी महाराज जब सन्धि का प्रस्ताव लेकर गये थे, तब दुर्योधन ने कृष्ण की बात तो नहीं मानी परन्तु अतिथि के नाते उन्हें भोजन का प्रस्ताव अवश्य दिया, तब श्री कृष्ण ने दुर्योधन से कहा था- दुर्योधन दूसरे के यहाँ भोजन दो परिस्थितियों में किया जाता है या तो उससे अत्यन्त प्रीति हो या स्वयं विपदाग्रस्त हो। हमारे मध्य इन दोनों में से कुछ भी नहीं, अतः मैं तुम्हारा भोजन अस्वीकार करता हूँ।

सम्प्रीति भोज्यान्नानि, आपद् भोज्यानि वा पुनः
न त्वं सम्प्रियसे राजन न चैवापद गता वयम्।

क्रमशः ....

आर्यजगत् के समाचार

१. आवश्यकता- कन्या गुरुकुल नवलपुर, बिजनौर, उ.प्र. के गुरुकुल में वैदिक प्रचार-प्रसार के लिए एक सुयोग्य आचार्या की आवश्यकता है। गुरुकुल के पास १५ बीघा जमीन, १४ कमरें, बिजली, जनरेटर, इनर्वटर, आवास व भोजन की भी व्यवस्था है।

२. शताब्दी समारोह- आर्यसमाज डालीगंज की स्थापना के सौ वर्ष हो रहे हैं। इस अवसर पर शताब्दी समारोह दि. १८ से २० सितम्बर २०१५, स्थान छत्रपति शिवाजी सभागार, रामाधीन सिंह कॉलेज, निकट आई.टी. चौराहा, बाबूगंज, लखनऊ, उ.प्र. में आयोजित किया गया है। जिसमें देश के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, संन्यासी तथा वेद-विदुषियाँ एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सम्पर्क- ०७४०८९९५५००, ९४५१२४५००९

३. विद्यापीठ का शुभारम्भ- महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम (आनन्दधाम आश्रम), गढ़ी, उधमपुर (जम्मू कश्मीर) द्वारा एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए २६ जुलाई २०१५ को विधिवत् 'कात्यायनमुनि विद्यापीठ' की स्थापना की गई, जिसमें ब्र. संदीप आर्य, ब्र. लोकेन्द्र आर्य तथा ब्र. जयेन्द्र आर्य इन तीन ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार विद्यापीठ के कुलपति एवं आश्रम के संरक्षक व मुख्य निर्देशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी ने कराया। उपस्थित जनसमूह ने जम्मू कश्मीर प्रान्त में इस प्रकार का प्रथम आर्ष गुरुकुल खोले जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। विद्यापीठ में व्याकरण, छन्द, छः दर्शन, निरुक्त आदि वैदिक वाङ्मय का अध्यापन कार्य निःशुल्क कराया जाएगा। विद्यापीठ में भोजन, आवास एवं पुस्तकों आदि का व्यय आश्रम वहन करेगा। अध्ययन के इच्छुक एवं दानदाता सम्पर्क करें- ०९४१८०५३०९२, ०९४१९१०७७८८

४. शिविर- आनन्दधाम आश्रम, गढ़ी आश्रम, उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दि. २७ सितम्बर से ४ अक्टूबर २०१५ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है, जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जायेंगे तथा योगदर्शन-पठन पाठन की भी व्यवस्था है। इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए सम्पर्क करें- ०९४१९१०७७८८, ०९४१९१९८४५१

५. अर्धवार्षिक उत्सव सम्पन्न- आर्यसमाजी सन्त महात्मा कालूराम जी के आश्रम 'वेद सदन' में आर्यसमाज, रामगढ़ शेखावटी का अर्धवार्षिक उत्सव गुरु पूर्णिमा के दिन ३१ जुलाई २०१५ को सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर फतेहपुर के विद्वान् आचार्य विनोद शास्त्री को 'स्व. सोहनलाल जड़िया स्मृति महात्मा कालूराम सेवा सम्मान' प्रदान किया गया। श्री जुगलकिशोर जड़िया, श्रीमती कान्ता जड़िया, श्री ओमप्रकाश जौहरी, जगदीश प्रसाद जौहरी, आचार्य शिवकुमार शास्त्री आदि ने शॉल गायत्री मन्त्र का दुपट्टा ओढ़ाकर, महात्मा कालूराम जी का चित्र, सत्यार्थप्रकाश एवं श्रीफल भेंटकर शास्त्री जी का सम्मान किया। आर्यसमाज फतेहपुर की ओर से आचार्य रामगोपाल शास्त्री, ईश्वरसिंह नेहरा ने तथा आर्यसमाज मण्डावा की ओर से भी श्री धर्मपाल आर्य तथा अरविन्द आर्य ने विनोद शास्त्री को वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

६. संस्कृताध्ययन- माता करुणा शास्त्री संस्कृत ज्ञान-विज्ञान केन्द्र, हिसार में उच्चारण शुद्धि (संस्कृत, हिन्दी), सामान्य संस्कृत, पाणिनीय व्याकरण एवं अन्य आर्ष साहित्य (दर्शन, उपनिषद् आदि) का अध्यापन इन्टरनेट या दूरभाष के माध्यम से करवाया जा रहा है। अध्ययन के इच्छुक सज्जन अग्रलिखित दूरभाष संख्या पर सम्पर्क करें- आचार्य सत्यवान् आर्य- ०९४६७२४८७७७

७. विद्यार्थी अवार्ड दिवस- फरीदाबाद में 'महर्षि-दयानन्द-शिक्षण-संस्थान' के संस्थापक-अध्यक्ष महात्मा कन्हैयालाल महता जी का जन्म दिवस १५ जुलाई की एक ऐसी ही तिथि है, जिस पर बड़ी संख्या में लोग उल्लसित होते हैं, प्रोत्साहन पाते हैं और सब ऊर्जा से संकल्पबद्ध होते हैं।

यह दिवस के.एल. महता दयानन्द पब्लिक विद्यालयों और महिला महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच 'विद्यार्थी अवार्ड दिवस' के रूप में मनाया जाता है। जिसमें सी.बी.एस.ई. तथा हरियाणा बोर्ड की दसवीं तथा बारहवीं कक्षाओं में अपने-अपने विद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त विद्यार्थियों को मेरिट-सर्टिफिकेट तथा अगले दो वर्षों की शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती है तथा सभी विद्यालयों में अपने बोर्ड में सबसे अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थी को महता परिवार से स्वर्ण-पदक द्वारा सम्मानित किया जाता है।

८. श्रावणी पर्व- २९ अगस्त २०१५ श्रावणी पर्व के पावन अवसर पर गुरुकुल हरिपुर, ग्रा. जुनानी, जि. नुआपड़ा, ओडिशा में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के विद्वानों के उद्बोधन व प्रवचन हुए। उपरोक्त जानकारी मन्त्री श्री शंकरकुमार अग्रवाल ने दी।

९. वेद प्रचार सप्ताह- आर्यसमाज पथ्रोट, जि. अमरावती,

महाराष्ट्र की ओर से २९ अगस्त से ०६ सितम्बर २०१५ श्रावणी पर्व तथा वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जायेगा, जिसमें नगर जागरण, ध्वजारोहण, प्रवचन, भजन, सन्ध्या, प्रार्थना, शोभायात्रा, यज्ञ, प्रसाद वितरण आदि का आयोजन किया जायेगा।। इस अवसर पर आमन्त्रित विद्वान् सुश्री साध्वी यशोदा सक्सेना, पण्डित बाबूराम आर्य आदि के उद्‌बोधन होंगे। प्रधान विनायकराव हरणे तथा मन्त्री श्री रामेश्वरराव वडुरकर ने आर्यजनों को कार्यक्रम में सम्मिलित होने का आह्वान किया।

१०. महिला संगठन का गठन- आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर के तत्त्वावधान में श्री प्रकाश आर्य मन्त्री म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के अथक प्रयास से आर्य महिला संगठन का गठन किया गया। इसमें श्रीमती शशी गुप्ता व श्रीमती गीता आहलुवालिया आदि अनेक महिलाओं को जोड़ने का प्रयत्न किया। साथ ही आजादी के ६९वें वर्षगांठ अर्थात् स्वतन्त्रता दिवस के पावन अवसर पर विशेष यज्ञ एवं झण्डारोहण किया गया। समाज के प्रधान डॉ. दक्षदेव गौड़ के द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा यज्ञ आचार्य चन्द्रमणि याज्ञिक के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

११. बलिदान दिवस सम्पन्न- भक्त फूलसिंह के पैतृक गाँव माहरा, जिला सोनीपत, हरि. में ७४वाँ बलिदान दिवस समारोह सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव की अध्यक्षता, सोनीपत के सांसद श्री रमेश कौशिक व समाज कल्याण एवं महिला बाल विकास मन्त्री श्रीमती कविता जैन के मुख्यातिथ्य तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल, महामन्त्री श्री रामपाल दहिया, गठवाला खाप के दादा श्री बलबीरसिंह मलिक व श्री जयसिंह ठेकेदार के आतिथ्य में १६ अगस्त २०१५ को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। १४ से १५ अगस्त तक दोनों समय देवयज्ञ के साथ-साथ सामवेद के मन्त्रों द्वारा यज्ञ के ब्रह्मा श्री संजय याज्ञिक ने सत्यनदेव सत्य के सहयोग से यजमानों द्वारा आहूति लगवाई। तत्पश्चात् रा.उ.मा.वि. माहरा में श्री योगेशदत्त भजनोपदेशक द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुति से छात्र-छात्राओं, गुरुजनों व ग्रामीणों को आनन्दित किया। १५ अगस्त को ब्रह्मा व भजनोपदेशक ने यज्ञ के उपरान्त स्वतन्त्रता से सम्बन्धित विचार व भजन प्रस्तुत किये। १६ अगस्त को प्रातः पूर्णाहूति कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम दोपहर बाद सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता आचार्य सोमदेव, आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर ने महाभारतकालीन यक्ष-युधिष्ठिर संवाद का दृष्टान्त देकर अपने व्याख्यान को हृदयग्राही बना दिया। ब्रह्मा जी ने १५ कन्याओं का उपनयन संस्कार भी करवाया। मुख्यातिथि श्री रमेश कौशिक ने आर्यसमाज हॉल के लिये ८ लाख तथा श्रीमती कमला जैन ने ५ लाख रुपये आधुनिक शौचालय एवं प्रांगण के फर्श हेतु देने की घोषणा की। समिति के प्रधान श्री बलवानसिंह मलिक ने उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया। श्री ओमप्रकाश आर्य ने आचार्य विजयपाल जी के साथ स्मृति चिह्न आगन्तुक विद्वानों, आर्य नेताओं तथा राजनेताओं को प्रदान किए। यज्ञ के कार्यक्रम का संचालन श्री चन्दराम आर्य, अजमेर व सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन श्री सुशील शास्त्री ने सफलतापूर्वक किया।

चुनाव समाचार

१२. आर्य समाज यमलार्जुनपुर, कैसरगंज, बहराइच, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री पेशकार सिंह, **मन्त्री**- श्री रामबक्श पाल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री गंगाप्रसाद मौर्य को चुना गया।

वैवाहिक

१३. वधू चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित आयु २६ वर्ष, कद- ६ फूट, शिक्षा-एम.टेक, बी.ए., ऑस्ट्रेलिया में इंजिनियर सेवारत युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित कन्या चाहिए। **सम्पर्क-०९९९२०००४४४**

शोक समाचार

१४. ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्य साहित्य के अनवरत प्रसारक श्री जमनादास जी हजारीमल जी आर्य का निधन ३१ जुलाई २०१५ को हो गया। इनके निधन से आर्यसमाज की महती क्षति हुई है। १९९५ में उन्होंने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा स्वामी अमृतानन्द जी, आचार्य गुरुकुल होशंगाबाद से ली थी और **मुनि कर्मवीर आर्य** नाम धारण किया। आपके जाने से पुरानी पीढ़ी के सच्चे आर्यपुत्र का अवसान हो गया है। वे एक समर्पित आर्य थे, वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में दिन-रात लगे रहते थे।

१५. आर्यसमाज श्रीगंगानगर, राज. के संरक्षक **श्री अशोक सहगल** का देहावसान ८६ वर्ष की आयु में ८ अगस्त २०१५ को हो गया। श्री सहगल मिलनसार, सहृदय व्यक्तित्व, आर्यसमाज व वैदिक विद्वानों के प्रति श्रद्धा व सहयोगी थे। वे आर्य कन्या गुरुकुल फतूही के भी संरक्षक व सहयोगी थे।

१६. दयानन्द मठ चम्बा, हि.प्र. के संचालक व सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के प्रधान, ऋषि दयानन्द के सच्चे सिपाही, आर्य एकता के लिए अपने अन्तिम समय तक प्रयासरत रहे **स्वामी सुमेधानन्द जी** का ५ अगस्त २०१५ को निधन हो गया। अन्त्येष्टी ६ अगस्त को हुआ। स्वामी जी का जाना आर्यसमाज की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ने स्वामी जी को श्रद्धाजंलि प्रदान की।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

निर्माणाधीन अतिथिशाला

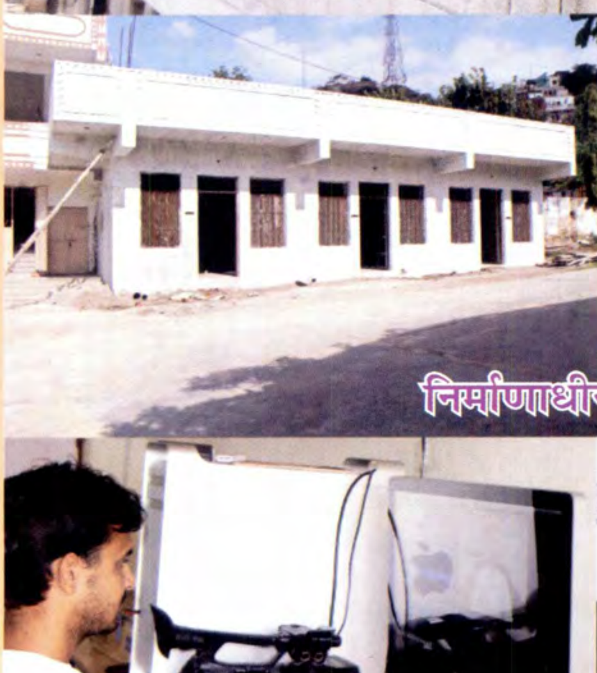

निर्माणाधीन वाचनालय

रिकॉर्डिंग का कार्य करते हुए

पाण्डुलिपियों का डिजीटल संरक्षण करते हुए

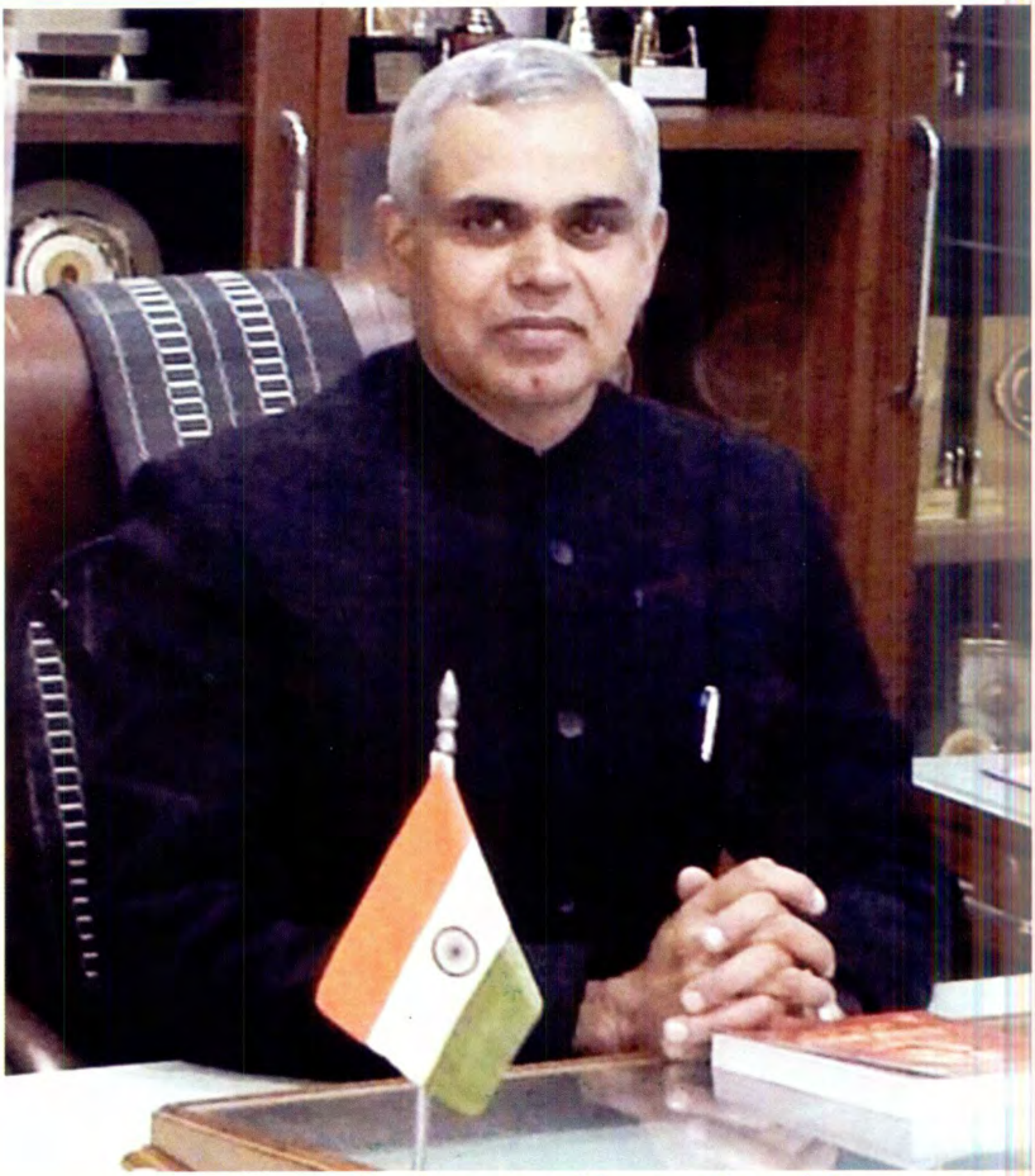

आर्य समाज के गौरव आचार्य देवव्रत जी आर्य के
हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल नियुक्त होने पर

हार्दिक बधाई

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१